प्रवेशांक

स्वतंत्रता दिवस के स्वर्ण जयन्ती
१५ अगस्त १९९७

बयार

[भोजपुरी के साहित्यिक पत्रिका]

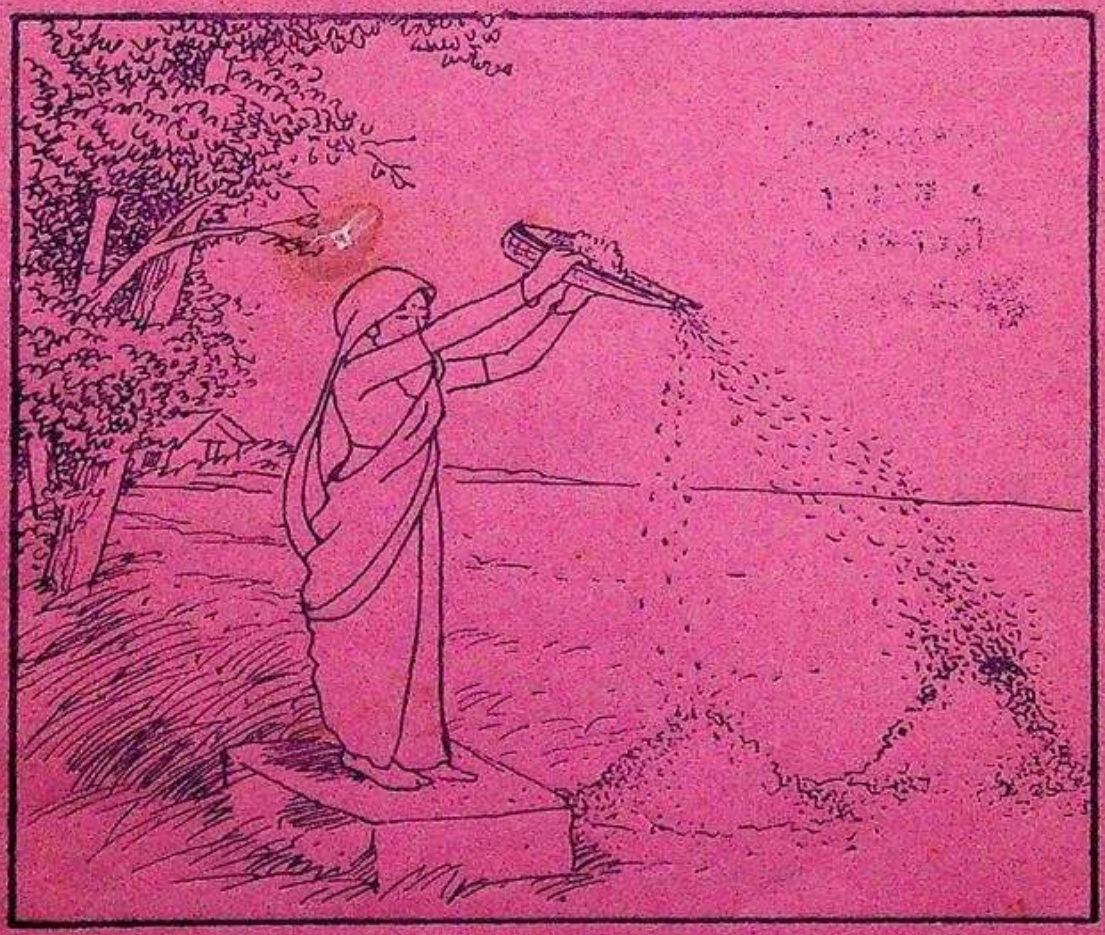

सम्पादक

भगवान सिंह 'भास्कर'

लोक साहित्य के अध्येता—

भगवान सिंह 'भास्कर' का हिन्दी–भोजपुरी का नया अनुपम अवदान

लोकधर्म

(भोजपुरी लोक साहित्यपरक शोधपूर्ण निबंध संग्रह के सन्दर्भ में विद्वानों के विचार

१. डा० शुकदेव सिंह, पूर्व प्राध्यापक (प्राचीन हिन्दी) बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी—

"भोजपुरी से सम्बन्धित लोकधर्म पर इन्होंने बहुत महत्वपूर्ण पोथी लिखी है। ·····लोकजीवन का इतना गम्भीर अध्ययन पहली बार हुआ है। ·····मैं भगवान सिंह 'भास्कर' की पुस्तक पढ़कर प्रसन्न भी हूँ और चकित भी। पुस्तकों और शास्त्रों से बाहर निकलकर लोक जीवन में ताक-झाँक करते हुए शायद पहली ही विद्यापोथी सामने आ रही है। मैं केवल इसकी प्रशंसा ही नहीं करता, बधाई देते हुए यह संदेश देना चाहता हूँ कि किताबों से उतरकर अपने आस-पास का जीवन देखते हुए महत्वपूर्ण और अधिक महत्वपूर्ण किताबें लिखी जा सकती हैं।"

२. डा० कृष्णदेव उपाध्याय, पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना—

"श्री राम चरित्र के साथ ही श्री 'भास्कर' जी ने भगवान श्रीकृष्ण, भगवान शिव एवं माँ दुर्गा के आविर्भावों और सूर्यषष्ठी, देवनदी गंगा तथा बालिकाओं के के पर्व पिड़िया के सम्बन्ध में भी शोधपूर्ण निबंध प्रस्तुत किया है। भोजपुरी लोक साहित्य का इतना सांगोपाङ्ग वर्णन सर्वथा नया है। मैं 'भास्कर' जी की अभूतपूर्व कृति 'लोकधर्म' पढ़कर बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। इनकी पुस्तक भोजपुरी और हिन्दी दोनों ही भाषाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण होगी।"

३. डा० विवेकी राय, पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना—

"एक सर्जक के रूप में भगवान सिंह 'भास्कर' ने भारतीय संस्कृति के मांगलिक क्षेत्रों की बहुत ही सार्थक खोज की है और इसी क्रम में उनकी पाचवीं पुस्तक लोकधर्म भी पाठकों के सामने आ गयी। ·····उक्त विषय से जुड़े सातो निबंध मूलत: शोधपरक हैं और उनमें विस्तार के साथ-साथ गहराई भी है। महापुरुषों के पौराणिक आधार पर प्रस्तुत जीवन और लोक-परम्परा में उनसे जुड़े गीतों में जो अन्तराल अथवा बिसंगति है उसके विश्लेषण से कुछ मौलिक प्रश्नों को खड़ा करते हुए लेखक ने बुद्धिजीवियों के लिए पर्याप्त विचारोत्तेजक सामग्री दी है। कहना उचित होगा कि भोजपुरी भाषा में यह पुस्तक अस्वादित विषय-वस्तु को प्रस्तुत कर बेजोड़ बन गयी है।"

—प्रबंध सम्पादक

www.bhojpurisahityangan.com

बयार

(भोजपुरी के साहित्यिक पत्रिका)

प्रवेशांक

स्वतन्त्रता दिवस के स्वर्ण जयन्ती
१५ अगस्त, १९९७ ई०

संरक्षक
श्रीमती मूर्ति सिंह

संपादक
भगवान सिंह 'भास्कर'

उप-संपादक
सुभाष चन्द्र यादव

सह-संपादक
व्यास मिश्र

प्रबंध-संपादक
प्रभात रंजन सिंह 'सुधांशु'

सम्पर्क-सूत्र
प्रखण्ड कार्यालय के सामने
लखरांव, सिवान (बिहार)–८४१२२६
[संपादन, संचालन – अवैतनिक, अव्यावसायिक]

प्रकाशक
भास्कर साहित्य भारती
प्रखण्ड कार्यालय सामने
लखरांव, सिवान (बिहार)

सहयोग राशि ५/- रु०

www.bhojpurisahityangan.com

एह अंक में

१. सम्पादक का कलम से ३

२. भारत गीत (राष्ट्रीय गीत) पाण्डेय कपिल ५

३. नतीजा (लघुकथा) भगवती प्रसाद द्विवेदी ६

४. गागर में सागर : मंगल गीत (पुस्तक समीक्षा) उमेश प्र० सिंह ७

५. गीत अशोक द्विवेदी १४

६. बिआह त भइल (कहानी) रामनगीना सिंह 'विकल' १५

७. भोजपुरी के विवाह गीत : भोजपुरी के भास्कर के अनमोल अवदान (पुस्तक समीक्षा) सुनील कुमार पाठक १७

८. भोजपुरी लोकगीतन में बिरहा (लोक साहित्य) डा० कमला प्र० मिश्र 'विप्र' २१

९. भीतर के साँच (लघुकथा) अतुल मोहन प्रसाद २४

१०. भोजपुरी साहित्य में सिवान के अवदान (साहित्य इतिहास) भगवान सिंह 'भास्कर' २५

११. समय (कहानी) पी० चन्द्र विनोद ३३

१२. भोजपुरी लेखन : दिशा आ दशा (निबंध) डा० बच्चन पाठक 'सलिल' ३८

१३. गजल गोपाल 'अश्क' ३९

१४. नवगीत सूर्यदेव पाठक 'पराग' ४०

१५. संतोषम् परम सुखम् (नुक्कड़ एकांकी) डा० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' ४१

१६. भोजपुरी लोकधुन में गीता : भगवान गीता (पुस्तक समीक्षा) सुभाष चन्द्र यादव ४३

१७. भारत मइया (राष्ट्रीय गीत) भगवान सिंह 'भास्कर' ४७

□

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादक का कलम से

रामा सुमिरीं माँ शारदा के चरनिया रे ना।
रामा विनयीं ले पंचन के मेंड़रिया रे ना॥
रामा देशवा त हवे मोर महानवा रे ना।
जहाँ बहे नित गंगाजी के धारवा रे ना॥
रामा गाँधीजी लीहले अवतारवा रे ना।
रामा देशवा के कइले आजादवा रे ना॥

स्वतन्त्रता के स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर भोजपुरी पत्रिका 'बयार' के प्रवेशांक भोजपुरिया नेही-छोही भाई-बहिन आ विद्वान लोगन के हाथन में देत हमरा अपार हर्ष के अनुभव होता। एह पुण्य बेला में आजादी के बलिवेदी पर अपना के कुर्बान करेवाला असंख्य भाई-बहिन के चरनन में हम सादर अभिनंदन समर्पित करत बानीं।

बहुत दिन से प्रबल इच्छा रहे कि पत्रिका का माध्यम से माँ वीणावादिनी आ अपना मातृभाषा भोजपुरी के सेवा करीं। बाकिर हमरा अन्तरात्मा के इच्छा रहे

www.bhojpurisahityangan.com

कि जबले कम से कम आधा दर्जन आपन किताब ना हो जाव तबले पत्रिका के सम्पादन हम ना करब। 'लोकधर्म' के प्रकाशन का बाद हमार इहो सोच पूरा हो गइल आ अब बयार के सम्पादन सुलभ हो गइल।

भोजपुरी मात्र बोली ना रहिके अब भाषा हो चुकल बा आ एकर ज्योति विश्व के अनेक देशन तक पहुँच चुकल बा। भोजपुरी जाति में अब जागरण आ गइल बा आ अब भोजपुरी साहित्य में लगातार वृद्धि हो रहल बा। बाकिर एह भाषा का साथे एगो बड़ा दुखद बात बा। एइजा कबहूँ बंगाली, पंजाबी, मराठी, तमिल, तेलगू, मलयालम, गुजराती इत्यादि होखे के गौरव जइसन गौरव कबहूँ विकसित ना भइल। इहे कारण बा कि एह भाषा के अभीले एइजा के जनमानस के व्यापक आधार ना मिल सकल। अपना एह पत्रिका 'बयार' के माध्यम से भोजपुरी नेही-छोही भाई-बहिन से ई निहोरा बा कि अपना भाषा भोजपुरी के सम्यक प्रतिष्ठा देके विश्व के रंगमंच पर एकरा के प्रतिष्ठित करे में सहयोग करीं। काहें कि—

"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को शूल॥"

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

बयार के शाब्दिक अर्थ होला हवा। एइजा बयार से तात्पर्य वोह हवा से बा जवन भोजपुरी क्षेत्र में प्रचलित समाजिक कुरीतिअन, अंधविश्वासन, जाति-पाँति के भेद-भाव तथा धार्मिक असहिष्णुता के बहाके एगो मंगलमय समाज के जीवंत करे जहाँ विश्व के समस्त प्राणी एगो स्नेहिल वातावरण में जीवन व्यतीत कर सके।

अंत में विद्या आ ज्ञान के अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती से इहे अरज बा कि हमरा के सम्बल दीं ताकि बयार समाज के एगो सम्यक दिशा देके अपना उद्देश्य में सफल हो सके।

—भगवान सिंह 'भास्कर'

www.bhojpurisahityangan.com

भारत गीत

—पाण्डेय कपिल

सृष्टि में स्वर्ग जो अगर बाटे,
देश भारत हमार घर बाटे।
छान्ह एकर बा हिमालय पर्वत,
बाड़ बाड़न के त लहर बाटे॥

फूल - फल अउर पेड़ - पौधा से,
लहलहाइल इहाँ के ज़र बाटे।
वन - खनिज - सम्पदा भरल पूरल,
रत्नगर्भा इहाँ के ज़र बाटे॥

मोर पर खोल इहाँ नाचेला,
इहाँ कुहुकत कोइलर बाटे।
तोता बोलेला तूती बोलेला,
इहाँ पपिहा के 'पी' के टर बाटे॥

मिथुनरत क्रौंच वध भइल इहवाँ,
काव्य के जन्म के पहर बाटे।
मेह इहँवा सनेस ले जाला,
उहँवा जहँवा प्रिया के घर बाटे॥

गंगा - यमुना आ कृष्णा कावेरी,
भक्ति सरधा के मानसर बाटे।
वेद गीता पुराण रामायण,
इहँवा के ज्ञान के शिखर बाटे॥

धर्म निरपेक्ष देश भारत में,
धर्म के भाव पुरअसर बाटे।
हिन्दू मुसलिम इसाई सिक्ख बउध,
सब में सह-भाव के पसर बाटे॥

www.bhojpurisahityangan.com

वेश - भूषा रिवाज में इहवाँ,
अइसे वैधिव्य त प्रखर बाटे।
किन्तु कश्मीर से केरला ले,
एक ही भावना के लर बाटे॥

इहवाँ भाषा अनेक बा, बाकिर
सब में एक भाव - स्वर बाटे।
एकता बा अनेकता में इहाँ,
इहाँ राष्ट्रीयता अमर बाटे॥

—इन्द्रपुरी, पटना-२४

लघुकथा

नतीजा

—भगवती प्रसाद द्विवेदी

"कुछ मिले मलिकार !" भिखमंगा गिड़गिड़ात बोलल। 'चल फूट त.....अबहीं बोहनी नइखे भइल।" सेठजी ओकरा ओर खा घाले वाली नजर से तकलन आ फेरू मुड़ी गाड़िके जलखावा करे में अझुरा गइलन।

"कई दिन से भुखाइल बानीं मलिकार ! कुछऊ त मिले माई-बाप !" ऊ बेरि-बेरि मुँह में आइल पानी के बरिआरी गर्दन के नीचे गटकत गिड़-गिड़ाते रहि गइल, बाकिर सेठजी पर ओकरा घिघिअइला के तनिको असर ना पड़ल।

"स्साला !" एकाएक दाँत पीसत भिखमंगा के मुँह से फूटल आ ऊ बाज नियर झपटिके थारी सहिते जलखावा छिनके नव-दू-एगारह हो गइल। थरिया के कोर से सेठजी के दहिना तरहथियो लहूलुहान हो गइल।

सेठजी कबो आपन घवाहिल तरहत्थी देखत रहलन त कबो आपन तिजोरी ! "त का ओह जमो-पूँजी के इहे नतीजा होई ?" सोचते-सोचते ऊ एँड़ी से चोटी तक थरथराए लगलन।

पोस्ट बॉक्स ११५
पटना-८००००४ (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक समीक्षा

गागर में सागर : मंगल गीत

—उमेश प्रसाद सिंह
एम० ए० (हिन्दी), बी० एड०

पुस्तक के नाम : मंगल गीत; संपादक : भगवान सिंह 'भास्कर', प्रकाशक : भास्कर साहित्य भारती, प्रखण्ड कार्यालय के सामने, लखरांव, सिवान (बिहार); प्रकाशन वर्ष १९९५ ई०, पृष्ठ सं० : १२८ मूल्य ४०/रु० ।

"एक सर्जक के रूप में भगवान सिंह 'भास्कर' ने भारतीय संस्कृति के मांगलिक क्षेत्रों की बहुत ही सार्थक खोज की है....."

—डा० विवेकी राय

पेशा से एगो कर्मठ बैंक पदाधिकारी, शिक्षा से विज्ञानवेत्ता गणितज्ञ आ साहित्यिक दृष्टि से कवि-कहानीकार-गीतकार-अनुवादक-संपादक-निबंधकार अउर लोक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान 'भास्कर' जी के सन्दर्भ में डा० विवेकी राय के उपर्युक्त विचार एकदम सही बा । इहाँ के अधिकांश पुस्तक-'भगवान गीता', भोजपुरी के विवाह गीत, मंगल गीत आ 'लोक-धर्म'-इहाँ के सांस्कृतिक भावना के परिचायके बाड़ीसन । इहे ना, हिन्दी कविता संग्रह 'इन्द्रधनुष' में कुछ धार्मिक कविता त बड़ले बाड़ीसन, तीनू खण्ड के प्रारम्भ इहाँ के धार्मिक वन्दने से कइले बानीं । अभी इहाँ के दर्जनो पुस्तक प्रकाशन के कतार में लागल बाड़ीसन ।

आज के युग में लोक गीतन के महत्व बहुत बढ़ गइल बा । फिल्मी गीतन अउर दूरदर्शन के चकाचौंध से आदमी अब उब चुकल बा आ लोकगीतन का ओर ललचाइल नजर से लोग देखता । इहे कारण बा कि आज लोकगीत गायकन के प्रतिष्ठा हर जगह जम रहल बा । आज के एही सच्चाई के भूमिका लेखक डा० विवेकी राय सकरले बानीं-"जागतिक जीवन में बढ़ती आपा-धापी और संघर्ष-सँकुल तनाव की कठिन स्थितियों को देखते हुए इन लोकगीतों की महत्ता अब आतुरता के साथ स्वीकारी जाने लगी है । ये गीत हमारे आन्तरिक जीवन के घावों को सहलाव देने और भरने सुखाने में औषधि का कार्य करते हैं ।"

www.bhojpurisahityangan.com

आनन्द के अवसर पर गावल जायेवाला गीतन के मंगल गीत कहल जाला। हिन्दू रीति-रिवाज में अन्त्येष्टि के छोड़िके सब संस्कार मांगलिक होले। भोजपुरी में अइसन गीतन के अपार भण्डार बा।

एह समीक्ष्य कृति 'मंगल गीत' में भास्कर जी बिआह के अवसर पर गावल जायेवाला १०२ गीत संपादिक कइले बानी। विवाह में अनेक नेग-चार होले। सब नेगन के अलग-अलग गीत होले, बाकिर कुछ अइसनो गीत होले जवन कवनो अवसर पर गावल जा सकेगा। अइसन गीतन में झूमर आ सहाना प्रमुख बाड़े। हर नेग के व्याख्या के संगे हर नेग के गीत त 'भोजपुरी के विवाह गीत' में दीहल बाड़ेसन आ एह पुस्तक में खाली मांगलिक झूमर आ सहाना के मनोरम अउर अनुपम संकलन लोक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान भगवान सिंह 'भास्कर' भोजपुरी साहित्य के सौंपले बानीं।

'मंगल गीत' में संकलित गीतन के ब्योरा अइसे बा—

(१) भगवान शंकर से सम्बन्धित सहाना —	१८
(२) सामान्य सहाना —	४५
(३) मांगलिक झूमर —	३९
	कुल–१०२ गीत

भगवान शंकर से सम्बन्धित सहाना— सहाना बहुते सरस गीत होले। भोजपुरी में सहाना के अच्छा भण्डार बा।

'भास्कर' जी एगो भक्त साहित्यकार बानीं। एह अध्याय में उहाँ के भगवान शिव के जीवन आ लीला से सम्बन्धित विभिन्न पहलू के भक्ति रस से सराबोर सहाना प्रस्तुत कइले बानीं। कुछ उदाहरण देखीं—

(१) भोजपुरी क्षेत्र में मांगलिक अवसर पर ई गीत सबसे पहिले गावल जाला। ई वेद मन्त्र अइसन पवित्र मानल बा—

"गाइ के गोबरे महादेव आँगना लिपाय,
गजमती आहो महादेव चउका पुराय।
सुनीं ए शिव! शिवा के दोहाई।।"

—गीत सं० १, पृ० सं० १८

(२) लोक गीतन के अनुसार भगवान शंकर अपना साली से दोसर शादी कइले रहनीं। गौरा जी एकर विरोध करस—

"पुरइन के पात पर सुतेली गउरा देइ,
सपना देखली अजगुत।

www.bhojpurisahityangan.com

मोरंग देशवा बाजन एक बाजेला,
शिवजी के होखेला बिआह ।।"

—गीत सं० १६, पृ० सं० ३५।

(३) शिवजी के महतारी-बाप ना रहला से उनका बिआह में नेग के दी ई एगो समस्या हो गइल--

"बालू के कुण्ड से शिवजी जनमले,
ना शिव के म'ई ना बाप।
शिवजी चलनीं गउरा बिआहे,
नाउनी रोकेली दुआर।।"

—गीत सं० १८, पृ० सं० ३९

(४) शिवजी अपना भक्त के हर इच्छा पूरा करीने। उहाँ के सीताजी से स्वयं कहत बानीं—

"आरे माँग माँग जानकी!
तू कवन फल मँगबू?
जो तोहरा हृदया समाय।।

—गीत सं० १३, पृ० सं० ३०

सामान्य सहाना—सहाना एगो मांगलिक गीत ह। 'भास्कर' जी सारण प्रमंडलीय क्षेत्र में प्रचलित ४५ सुन्दर सहाना दीहले बानीं जवना में जीवन के विभिन्न झाँकी चित्रित बाड़ेसन। कुछ उदाहरण देखीं—

(१) **बेटा-बेटी में असमानता**—समाज में तिलक-दहेज के कारण बेटी के जन्म एगो अभिशाप मानल जाला। एही से पुत्री के महतारी पुत्री के जन्म पर पश्चाताप कर रहल बाड़ी—

"जौं हम जनितीं जे धिया कोखि जनिहें।
पीयतीं हम मरीचि झरार।।
आरे मरीचि के झाके धिया मरि जइती,
छूट जइते गर के संताप।।"

—गीत सं० २, पृष्ठ सं० ३९

(२) **तिलक दहेज**—प्राचीन काल से हमरा देश में तिलक-दहेज के रिवाज चलि आवता। रानी सुनैना राजा जनक से पूछतारी कि रउरा दानदहेज का देब। जनक जी के जवाब देखीं--

www.bhojpurisahityangan.com

"आरे हाथी देबो घोड़ा देबो,
रुपया पचास हे।
आरे सीता अइसन बेटी देबो,
डोला के सिंगार हे ॥"

—गीत सं० ३५, पृ० सं० ७०

(३) कन्यादान के पवित्र भावना—प्राचीन काल से बेटी के बाप अपना इच्छानुसार वर खोजिके अपना पुत्री के दान करत आइल बा। कन्यालो पिता के एह आज्ञा के सहर्ष स्वीकार करत आइल बालो—

"पानवा उनकर खइनीं हो बेटी,
फूलवा लेहनीं उधार।
तोहरे वले हरनीं हो बेटी,
साजन रोके दुआर ॥"

—गीत सं० २३, पृ० सं० ५९

(४) वात्सल्य रस सम्बन्धी—'भास्कर' जी के मंगल गीत में वात्सल्य सम्बन्धी गीतन के कमी नइखे। उदाहरण देखीं--

"कंचन दूधवा पिअवनी ए सीता बेटी !
बेटा जोगे कइनीं हम दुलार ॥"

--गीत सं० ९, पृ० सं० ४६

(५) करुण रस सम्बन्धी--बेटी के विदाई त अपने आप में करुणा के सागर ह। 'भास्कर' जी के एह किताब में करुण रस के एगो उदाहरण देखीं--

"लोटवा में पनिया लीहले दउड़ेली कवन बेटी।,
दींना बाबा पउवाँ धोई दीं" ॥
एतना वचन जब सुनेले कवन बाबा।
बाबा रोवेले अच्छोधार ॥"

--सहाना सं० ६, पृ० सं० ४४

(६) वीर रस सम्बन्धी--मांगलिक गीतन में वीर रस के अभाव बा, बाकिर 'भास्कर' जी के एह पुस्तक में एहू के कमी नइखे। एगो उदाहरण देखीं—

"कानी अंगुरिया राम धेनुखा उठवले।
धेनुखा त भइले चकनाचूर ॥"

www.bhojpurisahityangan.com

(७) **बेमेल विवाह सम्बन्धी**--बेमेल विवाह कइगो कुरीतियन के जड़ बा। भास्कर जी के पैनी दृष्टि अइसनो सहाना पर पड़ल बा। एगो बूढ़ वर से विअहल कन्या आपन मानसिक क्लेश अपना भाई से अइसे कहत बिया—

"कहिया के बैर सधावल ए कवन भइया !
खोजि दीहल बूढ़ बहनोइ ॥"
--सहाना सं० ४१, पृ० सं० ७७

झूमर—झूमर बहुत सुन्दर गीत होले। एकरा बराबरी कवनो गीत नइखे कर सकत। एकरा के सुनिके सभे झूमे लागेगा। 'भास्कर' जी के एह कृति के मांगलिक झूमरन में राष्ट्रीय, शृंगारिक, पति-पत्नी में असमानता सम्बन्धी, समाज सुधार सम्बन्धी, पारिवारिक समस्या सम्बन्धी, कृषि समस्या सम्बन्धी हास्य रस सम्बन्धी आदि विभिन्न प्रकार के झूमर बाड़े-सन। दृष्टान्त देखीं !

(१) **राष्ट्रीयता सम्बन्धी**--राष्ट्रीयता के उच्च भावना से ओत-प्रोत एह झूमर में नायिका अपना हर वस्त्र में भारतवर्ष के नाम लिखवावे के चाहत बिया--

"आहो हमार पिया ! आहो हमार पिया !
पटना से साड़ी मँगवा द हमार पिया !
सड़िया में भारत लिखवा द हमार पिया !"
-- झूमर सं० ३८, पृ० सं० ११८

(२) **सामाजिक कुरीति सम्बन्धी**--बाल-विवाह एगो सामाजिक कुरीति बा। प्राचीन काल से भोजपुरी क्षेत्र में एकर प्रचलन बा। 'भास्कर' जी एकरा सन्दर्भ में अधोलिखित झूमर प्रस्तुत कइले बानीं--

"ना सुख जननी बाप-महतारी के,
नान्हे उमिरिया बिआह कइ देला सँवरिया।
ना सुख जननी भाई-भउजाई के,
नान्हे गवन कर देला संवरिया ॥"
--झूमर सं० ९, पृ० सं० ९१

(३) **बेकारी के समस्या सम्बन्धी**--बेरोजगारी के समस्या आज के युग में एगो बड़ चुनौती बा। शिक्षित लोगन के बेकारी त अउर सिरदर्द बा। एकरा सन्दर्भ में भास्कर जी के हई झूमर देखीं--

www.bhojpurisahityangan.com

"आई० ए०, बी० ए० पढ़ल पिया,
माटी कइले जाले हो।
टीसन पर जाई पिया,
पेटिया उठवले हो ॥"

--झूमर सं० १०, पृ० सं० ९२

(४) **पति-पत्नी में असमानता सम्बन्धी**--पति-पत्नी एक सिक्का के दू पहलू होले बाकिर कभी-कभी पतिलो पत्नी के अवहेलना करेला। 'भास्कर' जी के मंगल गीत में अइसनो झूमर बाड़े जवन आज के एह समस्या के ज्वलन्त उदाहरण बाड़े--

"अपने त घुमे राजा दिल्ली बनारस,
हमरा के डाल गइले खेत में मचान हो।
मकइया राजा बो गइले जी के जंजाल हो ॥"

—झूमर सं० २८, पृ० सं० १०९

(५) **पारिवारिक समस्या सम्बन्धी**—परिवार में सास-बहू, गोतिन-गोतिन, देवर-भाभी, भावज-भसुर आदि में अक्सर झगड़ा होते रहेला। 'भास्कर' जी के प्रस्तुत संग्रह में एकर अच्छा चित्रण बा—

"गोतिन-गोतिन में मार होला सास-बहू में झगड़ा,
भसुर जी से होला फउदरिया हो।
पिया ! खोल द केवड़िया ॥"

—झूमर सं० २९, पृ० सं० १०९

(६) **कृषि समस्या सम्बन्धी**--भारत एगो कृषि प्रधान देश बा। एइजा के किसान गहना बेचिके कर्जा लेके खेती करेले बाकिर प्राकृतिक प्रकोप से भा अइसहुँ खेती फेल हो जाला। अइसन स्थिति में किसान का करस ? देखीं—

"हँसुली बेचि-बेचि खेती उपरजलो,
खेतवा में उपजल भाँग।
हो फिकिरिया मरलस जान ॥"

—झूमर सं० २५, पृ० सं० १०६

(७) **श्रृंगार सम्बन्धी**—'भास्कर' जी के 'मंगल गीत' में श्रृंगारो रस के कमी नइखे। उदाहरण देखीं—

www.bhojpurisahityangan.com

(क) संयोग श्रृंगार—

"आँचर धइले कंगन दूनू छुवले,
धई बहियाँ झकझोरले,
सेजिया हम सेइब ए उधो !"

—झूमर सं० १४, पृ० सं० ९५

(ख वियोग श्रृंगार—

"जहिया से गइल बिदेशे बलमु ।
हम भइनीं जोगिनियाँ हो ।।"

—झूमर सं० २०, पृ० सं० १०१

(८) समाज सुधार सम्बन्धी—'भास्कर' जी एगो समाज सुधारक साहित्यकार बानीं । उहाँ के नजर से समाज सुधार कइसे छूटी ? गाँजा के बुराई पर चोट करत हई झूमर देखीं -

"गाँजावा के पियले तीनू काम बिगड़े,
अकिल गेयनिया जवनिया ।
तीनू कहाँ बिगले ए सखी ?"

—झूमर सं० ३३, पृ० सं० ११२

(९) हास्य रस—'भास्कर' जी के 'मंगल गीत' में हास्य रस के भी झूमर बाड़ेसन । एगो उदाहरण देखीं—

"नव मीटर कपड़ा के सूटवा सिअनवी ।
तबो नाहीं गिरगिटवा ढँपइले ।।"

—झूमर सं० ३४, पृ० सं० ११३

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के जनवरी १९९७ अंक में विद्वान समीक्षक भगवती प्र० द्विवेदी के भोजपुरी के सांस्कृतिक थाती : 'विवाह के गीत' आ 'मंगल गीत' नाम से एगो सुन्दर समीक्षा छपल बा । द्विवेदी जी लिखले बानीं—"खाली बिआह आ मंगल गीत पर ई दूनो किताब पहिलकी बेरि आइल बाड़ीसन ।" एह मंगल गीत के महत्व के सन्दर्भ में हिन्दी आ भोजपुरी के महान विद्वान डा० विवेकी राय पुस्तक के प्रस्तावना में ठीके लिखले बानीं —"सांस्कृतिक रुचि सम्पन्न व्यक्तित्व वाले भास्कर जी द्वारा प्रस्तुत शताधिक मांगलिक गीतों की सुसज्ज मंजूषा सामाजिक जीवन की एक मूल्यवान धरोहर है ।"

'भास्कर' जी के 'भोजपुरी के विवाह गीत' सांचहूँ भोजपुरी के सांस्कृतिक थाती बा, बाकिर 'मंगल गीत' सांस्कृतिक धरोहर के संगे-संगे गागर

www.bhojpurisahityangan.com

में सागर बा। एतना अधिक रसन के एक जगह समावश अउर विविध राष्ट्रीय, सामाजिक अउर पारिवारिक विषयक लोकगीत बहुत कम किताबन में मिलिहें। अइसन अनमोल अवदान देके भास्कर जी भोजपुरी के विकास में बहुत बड़हन योगदान कइले बानीं। एह खातिर इहाँ के जेतना बड़ाई कइल जाव, कम बा।

भारतीय स्टेट बैंक, मैरवा
जिला–सिवान (बिहार)

गीत

—अशोक द्विवेदी

रएनियाँ
बिलमे ना !
केहू कले-कले मन में समाय
रएनियाँ बिलमे ना !
दूध छलकावे चान
अँगनइया मचान
केहू जोन्हियन फाँड़ भरि जाय
रएनियाँ बिलमे ना !
लोरे कमल नहाय
जल बीच कुम्हिलाय
नैन पँखुरिन लोर टँगि जाय
रएनियाँ बिलमे ना !
तिप-तिप चुवे रस
मद चढ़े बरबस
गंध बेइली दे निनियाँ उड़ाय
रएनियाँ बिलमे ना !
हिया उठे उद्‌बेग
पिया सुते निरभेद
भोरे चिरई के बोलिया सुनाय
रएनियाँ बिलमे ना !

—सम्पादक 'पाती'
टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-२७७००१

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी

बिआह त भइल

—राम नगीना सिंह 'विकल'

केहू उनका के विद्वान कहे त केहू पागल कहे आ केहू पढ़ुआ मूरख कहे बाकिर देवेन्द्रजी रहले विचारक। भगवान में आ विकास में उनका पूरा विश्वास रहे। भला-बुरा के संघर्ष से कवनो तरह के व्यक्तिगत भा सामाजिक विकास होला। ई प्रक्रिया निरंतर चले वाली ह। व्यक्ति के आन्तरिक संघर्ष त अपना विकास के आखिरी लक्ष्य पाके समाप्त हो जाला मगर मानव समाज के संघर्ष आ विकास कहाँ तक जाके थमी ई कहल ना जा सके। देवेन्द्रजी ई बात अक्सर कहल करस।

मनीन्द्रजी के बेटा एम० ए० करिके हाले नौकरी पकड़ले रहे। देवेन्द्रजी के बेटी के विआह के चिन्ता में परल देखिके उनका से उनकर एगो मित्र कहले—"मनीन्द्र सिंह कइगो सामाजिक सुधार संस्थन से जुड़ल बाड़े। उनका बेटा का बिआह खातिर स्नातक लड़की चाहीं आ राउर बेटी बी० ए० ऑनर्स होइए गइल। उहवाँ जाईं। हमार विश्वास बा कि सब ठीक हो जाई।"

देवेन्द्रजी बड़ा उत्साह से रमौली गइले। मनीन्द्रजी के चासा-बासा-दशा देखिके भगवान के सुमिरले कि कृपा करस कि सम्बन्ध इहाँ हो जाव। नाश्ता-चाय के बाद बात शुरू भइल। बात के क्रम में मनीन्द्रजी कहले—"काल्हे एगो पार्टी आइल रहे। बिना मँगले अपने ओर से दू लाख नगद आ मारूति देबे के कहलस। हमार सुपुत्र तीन लाख पर अड़ल बाड़े। एही बीच अपने जवन कहीं हम बबुआ के मनावे के कोशिश करब।"

ई बात सुनते देवेन्द्रजी मानीं कि गाछ पर से गिर गइले। फेर तुरन्ते संभल के कहलन—"हम त एके लाख में—बारात का सवारी आ खर्च का नामे पचास हजार अउर पचास हजार में बेटी के सर-सामान आ बारात के स्वागत-सत्कार के प्रबन्ध कर सकत बानीं। एह से बेशी करेके

www.bhojpurisahityangan.com

हैसियत भगवान हमरा के देलहीं नइखन।" आगे ऊ फेर कहलन—"अब हम चलत बानीं आ भगवान से हमार इहे अरज बा कि रउरा बेटा का बेटे जनम लेस आ हमरा बेटी के बेटी होखो। बीस-पच्चीस साल के बाद रउरा हमरा लगे आके अरज करब कि हमरा पोता से अपना नतिनी के बिआह दस लाख तिलक (वोह समय समाज चाहे एकर जवन नाव धइले रहे) लेके कर दीहल जाव।

ई बात सुनिके मनीन्द्र जी के चेहरा क्रोध से लाल हो गइल। कहले कि अतिथि के दुआर पर से दुतकारल ना जाव बाकिर हम अतने कहबि कि बेटी बेचे के कल्पना करेवाला रउरा जइसन पागल आदमी दसो लाख देब त हम बेटा के बिआह ना करबि। बेटी बेचे के पाप-कल्पना ?

देवेन्द्र जी जवाब में कहले कि हम बेटी बेचे के सिर्फ कल्पना करत बानीं, रउरा बेटा बेचे के पुण्य लुटत बानीं। बात एतने नू बा कि एह पाप के समाज मान्यता दे देले बा। पहिले खुलसे रहलहा, आज ई काम कानून का डरे लुके-छिपे होता। त रउरा ई पुण्य लुके-छिपे करबि। पहिले एगो पुण्य लुके-छिपे केहू-केहू करे—गुपुत दान। आज समाज लुके-छिपे गुपुत आ दान करता। रउरो इहे करबि। रउरा समाज सुधारक बनल बानी। अब सुनीं कि बिआहन के इहे ढंग चलत रही त बीस बरिस में बात उल्टा हो जाई कि ना ? सरकारी आँकड़ा के अनुसार बेटिअन के जन्म दर घट रहल बा। गरभे में बेटा-बेटी के पता डाक्टर लगा सकता। आगे के बात हम का कहिं रउरा बूझते होखबि। समय आई जब लड़का लोगन का बिआह खातिर लड़की मिलल कठिन हो जाई। तब तिलक-दहेज वर पक्ष का ओर से कन्या पक्ष के दिआए लागी। एतना कहत देवेन्द्र जी मनीन्द्र जी के परनाम कके चलि दीहले।

घर के लोग का पूछला पर जब मनीन्द्र सिंह से भइल बात देवेन्द्र जी ब्योरेवार बतवले त उनकर मेहरारू रंज होके कहली कि रउरा पागल जइसन बात करबि त के रउरा कीहाँ सम्बन्ध करी।

चार दिन के बाद मनीन्द्र जी अपना आदमी के हाथे देवेन्द्र जी का नांवे एगो चिट्ठी भेजवलन। चिट्ठी में लिखल रहे कि रउरा हमरा हृदया में एगो चिनगारी फेंक गइनीं त ऊ हमरा खातिर क्रान्ति के एगो मशाल हो गइल बा। अब रउरा आईं आ रउरे परामर्श से बिआह के तेयारी होई।

ब्लॉक मोड़
गोपालगंज (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक समीक्षा :

भोजपुरी के विवाह गीत

--भोजपुरी के 'भास्कर' के अनमोल अवदान

□ सुनील कुमार पाटक

पुस्तक—भोजपुरी के विवाह गीत, सम्पादक—भगवान सिंह 'भास्कर', प्रकाशक—भास्कर साहित्य भारती, प्रखण्ड कार्यालय के सामने, सिवान (बिहार)। प्रकाशन वर्ष —१९९५ ई०, पृष्ठ सं० - १६४, दाम : ५०/- रु०। भूमिका लेखक—डा० कृष्णदेव उपाध्याय।

'विवाह' के भोजपुरी जन-जीवन में बहुते पवित्र आत्मिक बन्धन के रूप में स्वीकार कइल गइल बा। भोजपुरी क्षेत्र में विवाह मात्र कायिक ना वरन् मानसिक आ हार्दिक बन्धन मानल जाला। ए क्षेत्र में ई मानल जाला कि विवाह जन्म-जन्मातर खातिर दू आत्मा के मिलन होला। स्त्री आ पुरुष के परस्पर समन्वय अउर एक दोसरा के सुख-दुःख में अमिट-अटूट भाव से संयुक्त-संलिप्त बनल रहे के संकल्प एइमें समाहित रहेला। विवाह के कुछ दिन पहिलहीं 'हल्दी-कूट' के विधि सम्पन्न होला आ ओकरा बाद से रोज रात के समय मेहरारू लोग वैवाहिक गीत गावे लागेला। ए तरे एगो पूरा वैवाहिक माहौल पहिलहीं से बने लागेला। तिलक सम्पन्न भइला के बाद 'सगुन-उच्चार' होला आ शाम के समय 'साँझा' अउर रात के अन्तिम प्रहर 'ब्रह्म बेला' में महिलालो 'पराती' गीत गावे लागेला। भोजपुरी क्षेत्र में लड़की के घरे 'माड़ो' गाड़े आ 'मंडपाच्छादन' के परम्परा रहल बा। एहु अवसर पर मेहरारूलो द्वारा गावे जायेवाला गीत श्री 'भास्कर' के संग्रह में संकलित बाड़ेसन। मानर पूजाई, मटकोड़वा, चुमावन, पितर नेवतवनी, नहवावना, इमली घोंटउवा, परिछावन, द्वार-पूजा, गुरहथी, कन्यादान, सेनूरदान, कोहवर, जेवनार, बान्ह-खोलाई, धोती पहनउवा, माँग-बहोराई, कंगन-छुड़ाई, गाली, जोग आदि के अवसर पर सारण प्रमण्डलीय क्षेत्र में गावे जायेवाला प्रचलित मार्मिक गीतन के बड़ा ही सुन्दर आ मनभावन-संकलन लोक-साहित्य के अध्येता-

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्यकार श्री भगवान सिंह 'भास्कर' भोजपुरी साहित्य के सँउपले बानीं ।

श्री भास्कर के एह संग्रह के सबसे बड़ विशेषता ई बा कि इहाँ के भोजपुरी क्षेत्र में सम्पन्न होखेवाला वैवाहिक कार्यक्रम के विविध नेग चारन (लोकोपचारन) के स्वरूप आ प्रक्रिया के स्पष्ट विवरणो संबधित गीतन के पहिले प्रस्तुत कइले बानीं । डा० कृष्णदेव उपाध्याय एह संग्रह के भूमिका में लिखले बानीं — 'आजकल कालेज की शिक्षाप्राप्त नवयुवती स्त्रियों को इन विविध वैवाहिक विधि-विधानों का ज्ञान तक भी नहीं है । अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि आज से कुछ ही वर्षों पश्चात् ये विधि-विधान सर्वथा लुप्त न हो जाएँ ।'' निश्चये अइसन संकटापन्न स्थिति से भोजपुरी लोक-जीवन के उबारे के दिशा में श्री भास्कर के ई प्रयास प्रशंसनीये ना, परम प्रणम्य बन जाता । डा० उपाध्याय सहिये लिखले बानीं— "आज से पचास या सौ वर्षों पश्चात्, जब लोग इन विधानों की प्रक्रिया को भूल जायेंगे, तब भास्कर जी का यह वर्णन उस अज्ञान तथा अन्धकार में दीपशिखा का कार्य करेगा ।''

आज के ग्रामीण जीवन में लोक-संस्कृति के प्रति आस्था के स्वर अनुगुंजित नइखे होखत, बल्कि ओइमें शहरी उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रदर्शनवादी प्रवृत्ति घर करत जा रहल बा । निश्चये, तेजी से शहर बनत जा रहल भारत के गाँव कतिपय अर्थ में भारतीय सभ्यता आ संस्कृति के सामने प्रश्न-चिह्न बनत जा रहल बाड़ेसन । श्री भास्कर के संवेदनशीलता एह संक्रमण-कालो में अपना सांस्कृतिक धरोहर के बचा राखे के लमहर श्रमसाध्य प्रयत्न कइले बा । श्री भास्कर जी एह ओर संकेत करत खुद लिखले बानीं —"विवाह के अवसर पर हर विध पर गाये जानेवाले मांगलिक गीतों की जगह, फिल्मी गीतों से काम चलाये जा रहे हैं । यह देख मेरी अन्तरात्मा को बहुत कष्ट हुआ·····।'' वस्तुतः श्री भास्कर के इहे कष्ट, उहाँ के इहे व्यथा एतना महत्वपूर्ण आ ऐतिहासिक कार्य का ओर उहाँ के अभिमुख करे खातिर उत्प्रेरित कइले होई ।

भोजपुरी वैवाहिक कार्यक्रम के कुछ विधि-विधान त अइसन बाड़े जवना के सम्पादन के क्रम में मण्डप में उपस्थित सब लोग के आँख छलक उठेले आ अश्रुधार बहे लागेला । कन्या के माँग में सेनूर डालत वर से औरतन के ई आग्रह जब उनका मधुर कंठ से स्वरित होखे लागेला, तब सबका नयन से हृदय के ममत्व द्रवीभूत होके बहे लागेला—

www.bhojpurisahityangan.com

"चान सुरूजवा से मंगिया सजा दऽ,
सेनुरवा ए वर ! धीरे से डाल।
कइसन वा मंगल आज के दिनवा,
धरती गगनवा के होता मिलनवा ॥"

एही तरह एगो दोसरा गीत में कन्यादान करत पिता से पुत्री के ई प्रश्न —

"आज कथिये के छतिया बाबा ! कइले बानी,
धिया दान करतानी हो ?"

जेतना स्वाभाविक आ मार्मिक वा, ओतने हृदय-विदारक पिता के उत्तरो वा —

"आज पत्थर के छतिया बेटी हो ! कइले बानी,
धिया दान करतानी हो।"

एह संग्रह में संकलित बहुतेरे अइसन गीत बाड़े जवन भोजपुरी साहित्य के अमूल्य निधि बाड़े। भोजपुरी क्षेत्र में वैवाहिक कार्यक्रम के अधीन बहुत अइसन लोकोपचार प्रचलित बाड़े जवना के जरिये हास-परिहास के सृजन कके वातावरण के गमगीन होखे से बचावल जाला। एह लोकोपचारन के अवसर पर गावे जायेवाला गीतन में, हास्य आ व्यंग्य के चुटीलता देखते बनेला। गुरहथी, मटकोड़, तिलक, चुमावन, खान-पान आदि के समय पर समधी, भसुर, पंडित जी, नाइन आदि के देबेवाला गारी हास-परिहास के बेजोड़ उदाहरण वा—

(क) "अछत देहनी छींटे के चबा गइले भसुर,
माँड़वा में खोज भइल लजा गइले भसुर।"

(गुरहथी के अवसर पर भसुर के देबेवाला गारी)

(ख) "आरे सिवान के पंडीजी !
हमरा माँड़वा से हटि जा।
तहार गिलहरी के पोंछ अइसन गोंछिया,
हमार बबुआ डेराले जी ॥"

(वैवाहिक मण्डप में यज्ञ के आचार्य पुरोहित पंडित जी के देबेवाला गारी।)

सुधी साहित्यकार श्री भगवान सिंहजी द्वारा प्रस्तुत 'भोजपुरी के विवाह गीत' शीर्षक पुस्तक में संकलित १०८ विवाह-गीत सचमुच रूद्राक्ष माला के

www.bhojpurisahityangan.com

१०८ दाना के पवित्रता-पावनता धारण कइले बाड़े। डा० विवेकी राय श्री भास्करजी के एगो अन्य संग्रह 'मंगल गीत' में अइसन गीतन के महत्ता पर प्रकाश डालत लिखले बानीं—

"जागतिक जीवन में बढ़ती आपा-धापी और संघर्ष-संकुल तनाव की कठिन स्थितियों को देखते हुए इन लोकगीतों की महत्ता अब आतुरता के साथ स्वीकारे जाने लगी है। ये गीत हमारे आन्तरिक जीवन के घावों को सहलाव देने और भरने सुखाने के सन्दर्भ में औषधि का कार्य करते हैं।"

सारतः ई कहे में कवनो हिचक नइखे कि आज के युग में जबकि भारतीय लोक समाज के स्वस्थ पारम्परिक मूल्य, आस्थामूलक सांस्कृतिक चरित्र आ नैतिक आदर्श संकटग्रस्त दिखाई पड़त बाड़े, भौतिकता के अंधा दौड़ में मानवीय संवेदना अशक्त हो जा रहल बिया—अइसन में लोकगीतन में संचित मानवीय करुणा, तरलता, कोमलता, भावातुरता आ सौन्दर्य-प्रियता आदि के शाश्वत निधि के जुगावल आ जगावल राखे के श्लाघ्य प्रयास कके श्री भगवान सिंह 'भास्करजी' भारतीय भोजपुरी समाज आ संस्कृति के संजीवनी शक्ति प्रदान करे का दिशा में एगो स्तुत्य कार्य कइले बानीं। निश्चये, उहाँ के ई काम उहाँ के अशेष तेजस्विता आ यशस्विता प्रदान करी अउर उहाँ के भोजपुरी के कलावन्त, कुलवन्त आ कीर्तिवन्त साहित्यकार का रूप में समादृत होखब।

—सूचना एवं जिला जन-सम्पर्क पदाधिकारी
सिवान

सूचना

बयार के अगिला अंक कहानी विशेषांक होई। एकरा खातिर अपना रचना भेजीं। रचना अप्रकाशित, अप्रसारित एवं मौलिक होखे के चाहीं। रचना के संगे एह आशय के प्रमाण-पत्र भी भेजीं।

—प्रबंध सम्पादक

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी लोकगीतन में बिरहा

—भोजपुरी रत्न डा० कमला प्र० मिश्र 'विप्र'

संस्कृत के 'विरह' शब्द से भोजपुरी भाषा के बिरहा शब्द के निर्माण भइल बा, जवना के श्रेय बा भोजपुरी जनपद के। फारसी आ उर्दू में जवन रुझान गजल के बा उहे रुझान बा भोजपुरी में बिरहा के। अब त अनघा लोकभवन में गजल निजगुत रूप में लोग निखार रहल बा आ ओसहीं बिरहो के बानगी देखल बा। बिरहा के सवतुक पक्ष सराबोर त होखेला विरहे से बाकिर करुण, प्रेम, श्रृंगार भा वीरो प्रधान ढेर प्रसंग बिरहा में उजागर बाड़न सन। आकाशवाणी के लोक-साहित्य प्रसारण में बिरहा के व्यापकता के उत्तम सुअवसर सुलभ भइल जवना खातिर विशेष बड़ाई बा उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलन के। हारमोनियम, डुग्गी आ जोड़ी के संगत से कई ढंग के बिरहा, बिरहिया लोग गाके जनसाधारण के आनन्द-दायक मनोरंजन कर रहल बाड़े। बिरहा के परम्परा बहुत पुरान बा आ पहिले बिरहा बदे साज के कवनो महत्वे ना रहल। कान में अँगुरी लगाके बिरहिया टाँसी छोड़िहें त अकुलाइलो बटोही के गोड़ अंगद के गोड़ मतिन धरती छोड़े खातिर तैयार ना होखेसन। उत्तर प्रदेश के जिला आजमगढ़ वाला सियाराम के ठाकुर विश्राम सिंह नामी बिरहिया रहलन। उनका घरनी के देहावसान जवानिये में हो गइल। वोही विरह-वेदना से बेहाल ऊ गवले जे —

"नदिया किनारे एक ठे चिता धुँधुआवे,
लुतिया उड़ि - उड़ि गगनवा में जाय।
लहकि - लहकि चिता लकड़ी जरावे,
धधकि – धधकि नदी के सानवा दिखावे।
आइ के बतास अगिया के लहरावे,
नदिया के पानी आपन देहिया हिलावे।
चटकि – चटकि चिता में जरत शरीरवा,
नाहीं जानीं पुरुष जरे कि जरे तिरिया।

www.bhojpurisahityangan.com

चितवा किहाँ बइठल एक मनई दुखारी,
अपने अरमनवा के डारत बाटे जरिया।
कहे विसराम लिखि चितवन के काम,
मोर मनवा ई हो जाता बेकाम।
अइसने चिता एक दिन हमहीं जरवनी,
वोही संगे फूंकि दीहनीं आपन अरमान ॥"

आद्यान्तजी के एगो विधवा-विलाप सुनीं।

जिए के जियत बानीं चाहीं ना जिए के हम,
अब बाटे जियल पहाड़ ॥
रतिया में छलकल चानी के गगरिया,
कि बहे इमरितवा के धार।
कीजर के ललकी टिकुलिया में लहरल,
सुतल सनेहिया हमार ॥
हमरा करमवा में नाहीं इमरित बाटे,
नाहीं बाटे टिकुली सिंगार।
जहिया से गइली नयनवा के जोतिया,
कि हमरो सरगवा अन्हार ॥
सुनर भवनवा सुहगवा के रतिया,
भूतवा के भइल बा बसेर।
मंगिया के ललकी लकिरिया मेटाइल,
रहले करमवा के फेर ॥

एगो विरहिन के विरह—

"पिया - पिया रटत पियरि भइली देहिया,
लोगवा कहेला पिउ - रोग।
गउवाँ के लोगवा मरम नाहीं जानत,
भइले गवनवा ना मोर ॥"

भगवान श्रीकृष्ण के बालचरित्र—

"छोटी मुकि रहले त बछरू चरवले,
पियले बकेनवा के दूध।
ग्वेलग होइ के बंसिया बजवले,
भूलि गइलन गोपिन्ह के सुध ॥"

www.bhojpurisahityangan.com

जवानी के स्वच्छन्द विहार—

"रसवा के भेजलो साथ के भंवरवा,
रसवा ले अइले बड़ा थोर।
अतना भर रसवा में केकरा के बँटवो,
सगरी नगर हित मोर।।"

एह बिरहा के तात्पर्य—रूपरानी के प्रेमी बहुत लोग बा आ उनका पास बा बहुत कम रसामृत जवन उनका पतिदेव के आनंद भर बा. बस।

सुमिरन बिरहिया के—

"सुमिरिले ठइयाँ सुमिरीं माता भुइयाँ,
सुमिरिले सकल जहान।
हाथ - जोरि बिनई नव - दुर्गा के,
श्री गनेशजी, भगवान।।"

बिरहा धोबी के—

'मोटी-मोटी लिटिया पकइहे धोबिनिया,
बिहने चले के बाटे घाट हो।
सउने के बाटे तोहरा गदहा के लदिया,
हमरा पीटे के बाटे पाट हो।।"

सवालो-जवाब पर सैकड़न बिरहा सुने में आवेले सन।

हम अपना बचपन में अपढ़ रामदेनी अहीर आ नथून बाँसफोर के सवाल-जवाब वाला बिरहा सुनले रहीं। ऊ लोग करुण, शृंगार भा वीर-रस के बिरहा गावला के अलावे बिरहा क्रम में फुहरो पातर शब्दन के प्रयोग करे लागस त श्रोतागण उनके चुप करा देत रहे। रामदेनी अहीर धप-धप गोर छव फुटा जवान रहलन। बाँया कान्हे लाल लउर लीहले दहिना कान में अँगुरी लगा के ऊ बिरहा के टाँसी मारस त लोग कान पातिके उनका सुरीला स्वर के रुचिगर आनंद के अनुभव करे लागत रहे। अनपढ़ आदमी आ रामायन भा पुरानन के प्रसंगन के ऊ बिरहा में बटोरले रहस। उनकर कइगो बिरहा हमरा अबहीं ले मन परत बाड़ी सन आ उन्हन में एगो अइसे बा—

"लाल घोड़वा पर वीर लछुमन विराजत,
उजर घोड़वा पर भगवान।
सोने के मचियवा सीता बइठल बाड़ी,
चंवर डोलावत हनुमान।।"

—विप्र नगर, बक्सर (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

लघुकथा

भीतर के साँच

—अतुल मोहन प्रसाद

बाल विकास मंदिर के प्रभारी द्वारा बार-बार मना कइला के बावजूद वोह मंदिर के बाल चपरासी लड़िकन के पानी पिलावे के बजाय अपना आदत के अनुसार ओही सब के साथे खेले लागत रहे। एकरा से प्रभारी महोदय हमेशा परेशान। करस त का करस ? एक दिन छुट्टी के समय ऊ बाल चपरासी गप्पू के डाँटे के बजाय समझावे के कोशिश कइलन—"देख गप्पू ! तोहरा के कई दिन मना कइनीं कि लड़िकन के साथे मत खेल, बाकिर तू त मानत नइख। अरे ! एइजा त उहे लड़िका खेले लनस जवना के घरे खेले खातिर जगह नइखे। एहिजा बड़हन जगह देखिके खेले लागे लनस। बाकिर तोहरा पास त अतना जगह बा, तू काहें खेले लागत बाड़ ? तू त छुट्टी के बादो खेल सकत बाड़।"

गप्पू कुछ क्षण खामोश रहल। ओकर होठ बोले खातिर सकपकाइल।

"कह ! का कहे के चाहत बाड़ ?"—प्रभारी गप्पू के बोले खातिर उत्साहित कइलन।

"साहब !" गप्पू साहस बटोरत मासूमियत से कहलस—"हमरा अतना बड़ जगह रहित त अपना गाँव से अतना दूर अपना माई-बाबू के छोड़ के नोकरी करे काहें अइतीं ? छुट्टी हो गइला के बाद जब सब लड़िका घरे चल जइहन सँ त हम केकरा सँगे खेलब ?"— खामोश होखे के पारी अब प्रभारी महोदय के रहे। "..... ....." "बोल साहब ! बोल !" गप्पू के रुआँसा आवाज हाता में पसर गइल।

- भारतीय स्टेट बैंक
मेन रोड बक्सर (बिहार)
८०२१०१

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्य-इतिहास

भोजपुरी साहित्य में सिवान के अवदान

—भगवान सिंह 'भास्कर'

उत्तर बिहार के पाँच भोजपुरी भाषी जिला बाड़े—सारन, सिवान, गोपालगंज, पश्चिमी चम्पारण आ पूर्वी चम्पारण। एइमें सिवान जिला में प्राचीने समय से साहित्य, समाज आ राजनीति के त्रिवेणी बहत रहल बिया। एही माटी के सोना रहले डा० राजेन्द्र प्रसाद जे रत्न बनके स्वाधीनता संग्राम के बहुत समय ले नेतृत्व कइले आ भारतीय गणराज्य के लगातार १२ वर्ष तक राष्ट्रपति रहले। राजनीतिओं में रहिके ऊ संत रहले आ साहित्य में अपना अनमोल कृतिअन (१) मेरे यूरोप के अनुभव (२) बिहार में महात्मा गाँधी (३) आत्मकथा (४) चम्पारण में महात्मा गाँधी (५) बापू के कदमों में, (६) इंडिया डिवाइडेड (७) संस्कृत शिक्षा और उसकी उचित दिशा (८) साहित्य, शिक्षा और संस्कृति (९) भारतीय शिक्षा (१०) खादी का अर्थशास्त्र आ (११) संस्कृत साहित्य का अध्ययन—से हिन्दी आ साहित्य के बड़ सेवा कइले। महापंडित राहुल सांकृत्यायन एही जिला के माटी के आपन कर्मक्षेत्र चुनले।

अइसे त एह माटी के लोग हिन्दी, अँग्रेजी, संस्कृत आ उर्दू के माध्यम से राष्ट्र आ समाज के सेवा करते आइल बा, बाकिर भाषा का विकास के संगे-संगे भोजपुरी के प्रति लोग में समर्पण के भावना बढ़ला से भोजपुरिओ में अनेक पुस्तकन के प्रणयन भइल। बाकिर एह जिला के साहित्यकार लोगन के भोजपुरी में योगदान के स्पष्ट रूप अभी ले सामने ना आ सकल। एह जिला के साहित्य के संदर्भ में कुछ विद्वान लोगन के निबन्ध हमरा पढ़े के मिलल, बाकिर ओइमें गुटबाजी आ जातीयता के कुछ बदबू परिलक्षित भइल। ई देखिके हमरा बहुत तकलीफ भइल आ हम सिवान जिला के वास्तविकता से भरल भोजपुरी साहित्य के इतिहास लिखे के सोचनीं।

एह जिला से अबतकले भोजपुरी में लगभग ५० पुस्तक आ पत्रिका प्रकाशित हो चुकल बाड़ीसन जेइमें लगलग आधा दर्जन अधोलिखित

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्यकारलो के विशेष अवदान बा—

आचार्य महेन्द्र शास्त्री : पुस्तक ५

सूर्यदेव पाठक पराग : पुस्तक ६ + पत्रिका १ = ६

प्रो० ब्रजकिशोर : पुस्तक ६ + पत्रिका १ = ७

भगवान सिंह 'भास्कर' : पुस्तक ६ + पत्रिका २ = ८

विमल कुमार सिंह 'विमलेश' : पुस्तक ४ + पत्रिका १ = ५

अक्षयवर दीक्षित : पुस्तक ७

शारदानन्द प्रसाद : पुस्तक ४

पत्रिका के सन्दर्भ में संपादक, उपसंपादक के गिनती कइल बा, संपादक मण्डल के सदस्य के ना।

ई निबंध तीन खण्ड में बा—

पहिला खण्ड—एह खण्ड में वोही साहित्यकारलो के चर्चा बा जेकर जन्मभूमि आ कर्मक्षेत्र दूनू सिवान जिला बा।

दूसरा खण्ड—एह खण्ड में अइसन साहित्यकार लोगन के चर्चा बा जेकर जन्मभूमि सिवान जिला बा बाकिर कर्मक्षेत्र अन्यत्र बा।

तीसरा खण्ड—एह खण्ड में अइसन साहित्यकार लोगन के चर्चा बा जेकर जन्मभूमि त सिवान जिला के बाहर बा बाकिर कर्मक्षेत्र सिवान जिला रहल बा।

सरकारी सेवा के क्रम में स्थानान्तरण त होते रहेला, ऐसे वर्त्तमान समय में कार्यस्थल के आधार मानल गइल बा। महिलालो के सन्दर्भ में उनकरा पतिलो के जन्मस्थान के आधार मानल बा।

अब वर्णक्रमानुसार एह जिला के साहित्यकारलोगन आ वोह लोगन के कृतियन के अवलोकन करीं !

पहिला खण्ड

(२) **उमादत्त शर्मा**—शर्माजी के निम्नलिखित दूगो पुस्तक प्रकाशित बाड़ीसन--

(i) बाल महाभारत

प्रकाशक--उमादत्त शर्मा, शर्मा सदन, फुलेना शहीद पार्क पथ, नया बाजार, महाराजगंज (सिवान), प्रकाशन वर्ष : १९७६ ई०, पृष्ठ सं० ५१।

विशेषता—महाभारत के बालोपयोगी रूप में कथा (पहिला खंड)।

www.bhojpurisahityangan.com

(ii) आजादी के हलचल

प्रकाशक--शर्मा सदन, नया बाजार, महाराजगंज (सिवान)।

प्रकाशन वर्ष : सम्भवतः १९७५ के आसपास।

विशेषता -- एइमें सारन जिला के आजादी के लड़ाई के संस्मरण संकलित बाड़ेसन।

(३) **चन्द्रदीप पाण्डेय**--सिवान जिला भोजपुरी साहित्य के पूर्व अध्यक्ष पाण्डेयजी के प्रकाशित पुस्तक बा—

(i) वाणी के सुमन

प्रकाशक : भक्त मण्डल, महुआरी समाधि आश्रम, बड़हरिया पथ, सिवान; प्रकाशन वर्ष : १९७२ ई०, पृष्ठ सं० १११।

विशेषता-एह पुस्तक में पाण्डेय जी के हिन्दी के सँग-संगे भोजपुरी के दसगो कविता संग्रहीत बाड़ी सन। एइमें सन्त के महिमा के वर्णन बा।

(४) **चन्द्रशेखर भारती** —अपना लिखल गीतन के घम-घम के गा-गा कर जनसाधारण में प्रचारित करेवाला भारतीजी के प्रकाशित पुस्तक बा–

(i) पाकिस्तान के दीवाल

प्रकाशक—प्रजा सोशलिस्ट पार्टी कार्यालय, दरौंदा महाराजगंज, पृष्ठ सं० १६।

विशेषता—एइमें भारत पर पाकिस्तान के आक्रमण अउर तत्कालीन विषयन पर भारती जी के १२ गीत संग्रहीत बाड़ेसन।

(५) **परमात्मा पाण्डेय**—पाण्डेय जी के बीचे लिखल नाटक प्रकाशित बा।

(i) अतियाचार

प्रकाशक–साहित्यायन, पो०-पचरूखी, जिला-सिवान; प्रकाशन वर्ष : १९७४ ई०, पृष्ठ सं० ३३।

विशेषता—ई एगो सामाजिक नाटक बा जवना में दीन-हीन पर अमीर के छल-प्रपंच के चित्रण कइल बा।

(६) **प्रदीप कुमार श्रीवास्तव 'प्रभाकर'**--प्रभाकरजी के सम्पादन में अधोलिखित पत्रिका निकलत रहे।

(i) पत्रिका के नाम-कचनार

प्रकाशक : भोजपुरी संगम, मतनपुरा, पो०-बादर जमीन, जिला—सिवान; पृष्ठ स० १२।

www.bhojpurisahityangan.com

पहिला अंक के प्रकाशन : फाल्गुन १९८१ ई०, एकर प्रकाशन अनियमित रहे।

(७) **भगवान सिंह 'भास्कर'** - (जन्म २०-१०-१९४९ ई०) भारतीय स्टेट बैंक में पदाधिकारी के रूप में कार्यरत भास्करजी के भोजपुरी के प्रकाशित पुस्तक बाड़ीसन—

(i) भगवान गीता : पहिला खण्ड

प्रकाशक : भोजपुरी विकास मण्डल, सिवान; प्रकाशन वर्ष : १९९४ ई०, पृष्ठ स० १४८ मूल्य २४।- रु०।

विशेषता – एइमें श्रीमद्भगवद्गीता के प्रारम्भिक छः अध्यायन के ८० भोजपुरी लोकगीतन का धुन में अनुवाद बा।

(ii) भोजपुरी के विवाह गीत (सम्पादन)

प्रकाशन--भास्कर साहित्य भारती, सिवान

प्रकाशन वर्ष : १९९५ ई०, पृष्ठ सं० : १६४; मूल्य : ५०।- रु०

विशेषता--एइमें भोजपुरी विवाह के विधि-विधानन के व्याख्या सहित हर नेग के गीत। ३६ नेग के कुल १०८ गीत।

(iii) मङ्गल गीत (सम्पादन)

प्रकाशक—भास्कर साहित्य भारती, सिवान।

प्रकाशन वर्ष : १९९५ ई०, पृष्ठ स० : १२८, मूल्य : ४०।- रु०

विशेषता-एह पुस्तक में भगवान शंकर से सम्बंधित सहाना १८, सामान्य सहाना ४५, मांगलिक झूमर ३९। कुल १०२ मांगलिक झूमर आ सहाना संग्रहीत बाड़ेसन।

(i) लोकधर्म

प्रकाशक-भास्कर साहित्य भारती सिवान, प्रकाशन वर्ष : १९९५ ई०, पृष्ठ स० २०८, मूल्य : ६०।- रु०।

विशेषता – एह पुस्तक में भोजपुरी लोकगीतन पर आधारित भास्कर जी के भगवान राम, भगवान कृष्ण, भगवान शंकर, माता दुर्गा, छठ, गंगा आ पिंड़िया पर शोधपूर्ण सातगो निबंध संग्रहीत बाड़ेसन।

(v) डुमरी कतेक दूर (संयोजक)

प्रकाशक : अ० भा० भो० भा० स० जिला इकाई सिवान।

प्रकाशन वर्ष : १९९४ ई०, पृष्ठ स० १७२, मूल्य : ४५।- रु०।

www.bhojpurisahityangan.com

विशेषता—एह पुस्तक में २५ साहित्यकार लोगन के विभिन्न विषयन पर २५ निबंध संग्रहीत बाड़े।

(vi) सोनहुला सफर (प्रेस में)

विशेषता-एइमें कन्या कुमारी, कलकत्ता, नागपुर, मद्रास, जगन्नाथपुरी, त्रिवेन्द्रम, कोणार्क, पूर्णिया आदि से सम्बंधित यात्रा सस्मरण संकलित बाड़े।

पत्रिका सम्पादन (i) बयार (भोजपुरी के छमाही पत्रिका)

प्रकाशक : भास्कर साहित्य भारती सिवान, प्रथम प्रकाशन : १९९७ ई०, पृष्ठ स० ४८, मूल्य : ५।- रु०। भास्करजी एह पत्रिका के सम्पादक बानीं।

(ii) बिगुल (भोजपुरी के तिमाही पत्रिका)

प्रकाशक : साहित्य कला मंच, भिट्ठी, सिवान।

प्रथम प्रकाशन : १९९० ई०, पृष्ठ सं० ३२, मूल्य ५।- रु०

भास्करजी एह पत्रिका के उपसम्पादक बानीं।

(८) **भोलानाथ भावुक** (जन्म १६-१२-१९१८ ई०)—भावुकजी के निम्नलिखित पुस्तक बा—

(i) अंजुरी भर अंजोरिया

प्रकाशक : नव संगम परिवार, कदम कुआँ, पटना-३

प्रकाशन वर्ष : १९६८ ई०, पृष्ठ स० ४०, मूल्य २ ५० रु०

विशेषता : एह संग्रह में भावुकजी के १६ गो कविता आ गीत संग्रहीत बाड़ेसन।

(९) **मणिराज प्रसाद 'मधुकर'** (जन्म १-१-१९३१ ई०)—मधुकरजी के निम्नलिखित पुस्तक बाड़ीसन—

(i) दरबारी कुटिला रानी

(ii) सच्चाई के पहरूआ

प्रकाशक : कबीर विचार मंच, स्टेशन रोड, सिवान।

प्रकाशन वर्ष : १९८७ ई०, पृष्ठ स० १८३, शूल्य ५।- रु०।

विशेषता : सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के जीवनवृत्त पर आधारित एगो सुन्दर भोजपुरी महाकाव्य।

(१०) **आचार्य महेन्द्र शास्त्री** : (जन्म १६-४-१९०१ ई०, मृत्यु ३१-१२-१९७४ ई०) भोजपुरी के भगीरथ महेन्द्र शास्त्री के निम्नलिखित पुस्तक बाटे—

www.bhojpurisahityangan.com

(i) चोखा

प्रकाशक : राहुल पुस्तकालय रतनपुरा, बरास्ता, महाराजगंज (सारन)
प्रकाशन वर्ष : १९५५ ई० ।
पुस्तक के भूमिका रामजीवन शर्मा 'जीवन' हिन्दी में लिखले बाड़े ।
विशेषता--एह पुस्तक में कवि के प्रगतिशील कविता संग्रहीत बाड़ीसन

(ii) धोखा

प्रकाशक : राहुल पुस्तकालय, पो० रतनपुरा भाया महाराजगंज (सिवान)

प्रकाशन वर्ष : १९६२ ई०, पृष्ठ स० १६ ।

विशेषता : एह पुस्तक में चीन-भारत के लड़ाई-संबंधी कवि के १२ कविता संग्रहीत बाड़ीसन ।

(iii) भकोलवा (भोजपुरी कविता)

पुस्तक मिले के पता : ग्राम + पो० रतनपुरा, बरास्ता महाराजगंज (सिवान) । प्रकाशन वर्ष : १९२१ ई० ।

विशेषता : शास्त्रीजी एह किताब के अपना छोटा भाई रामजी पांडेय के नाम से छपवले रहले ।

(iv) हिलोर

ई शास्त्री जी के एगो मिलल-जुलल संस्करण बा जवना में भोजपुरी-हिन्दी दूनू के कविता संग्रहीत बाड़ीसन ।

(v) आज की आवाज

प्रकाशक : हरिकिशोर प्रसाद, सेक्रेटरी बसन्तपुर हाईस्कूल, सारण ।
प्रकाशन वर्ष : १९४७ ई०, पृष्ठ स० ७६ ।

विशेषता : एह पुस्तक में शास्त्रीजी के २० भोजपुरी के आ ३० हिन्दी के कविता संग्रहीत बाड़ीसन । एकर भूमिका प्रो० शिवपूजन सहाय जी हिन्दी में लिखले बानीं ।

पत्रिका सम्पादन : भोजपुरी द्वैमासिक

प्रकाशन काल : बरसात १९४८ ई० (प्रवेशांक)
प्रकाशक : भोजपुरी कार्यालय, कदम कुआँ, पटना-३

एक अंक निकलला के बाद पत्रिका बन्द हो गइल । एह अंक में मनोरंजन जी के फिरंगिया, रघुवीर नारायण के आत्मकथा इत्यादि रचना आइल रहे ।

www.bhojpurisahityangan.com

(११) **डॉ० रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुबोध'** (जन्म १७-७-१९२५ ई०) कुबोधजी के अधोलिखित पुस्तक प्रकाशित बा—

(i) के

प्रकाशक : भोजपुरी साहित्य सदन, सिवान; प्रकाशन वर्ष : १९८२ ई०; भूमिका लेखक : हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'।

विशेषता : ई पुस्तक अनुष्टुप त्रिपदी आ ध्रुवपद में लिखल एगो आध्यात्मिक काव्य बा। एइमें तीन खण्ड बा—उद्भव, विकास अउर अवसान।

(१२) **शारदानन्द प्रसाद** : भोजपुरी के जानल-मानल कवि शारदा बाबू के प्रकाशित पुस्तक बाड़ीसन।

(i) पुरइन

प्रकाशक : ग्रन्थरत्नम, २ ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना।

प्रकाशन वर्ष : १९७१ ई०, पृष्ठ स० ४८।

विशेषता : कवि के २८ कवितन के ई संग्रह बा जवना में कुछ विरह गीत आ कुछ व्यंग्य गीत बाड़ेसन।

(ii) बाकिर

प्रकाशक : भोजपुरी संस्थान, २ ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना।

प्रकाशन वर्ष : १९७८ ई०, पृष्ठ स० ३६।

विशेषता : एइमें प्रसादजी के ३६ युगबोध के कविता बाड़ीसन।

(iii) सुबहिता

प्रकाशक : भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना-८००२४

प्रकाशन वर्ष : १९९५ ई०, पृष्ठ स० ४८, मूल्य १५।- रु०

विशेषता : एइमें कहानीकार के १९ कहानी बाड़ीसन जवना में कुछ के शैली संस्मरणात्मक बा, त कुछ के स्वरूप लघुकथात्मक बा त कुछ पूर्ण कहानी के रूप में रचाइल बा।

(iv) खेल खेलाड़ी आ ओकर बोल

प्रकाशक : भोजपुरी साहित्य मंदिर, जगतगंज, वाराणसी-२

प्रकाशन वर्ष : १९७१ ई०, पृ० २८।

विशेषता : भोजपुरी क्षेत्र के बच्चन के ३० खेलन के वर्णन।

(१३) **शिवजी राय** : भोजपुरी के कवि रायजी के प्रकाशित पुस्तक बा-

(i) लहरल भोजपुरी

प्रकाशक : भोजपरी साहित्य सदन, सिवान।

www.bhojpurisahityangan.com

प्रकाशन वर्ष : १९७५ ई०, पृष्ठ स० १२० ।

विशेषता : एह पुस्तक में कवि के १२ गीत संग्रहीत बाड़े ।

(१४) **शैलजा कुमारी श्रीवास्तव** (जन्म १९-१०-१९२७ ई०, मृत्यु ३१-१२-१९८९ ई०) भोजपुरी के विदुषी महिला श्रीमती श्रीवास्तव के प्रकाशित पुस्तक बा—

(i) चिंतन कुसुम

प्रकाशक : भोजपुरी संस्थान, पटना ।

प्रकाशन वर्ष : १९८९ ई०, पृष्ठ स० १५५, मूल्य २५।- रु० ।

एह पुस्तक में निबंधकार के विभिन्न विषयक ११ विद्वतापूर्ण निबंध संग्रहीत बाड़ेसन ।

(१५) **सुनील कुमार पाठक** (जन्म ४-२-१९६४ ई०) बिहार प्रशासनिक सेवा के पदाधिकारी श्री पाठक जी के प्रकाशित पुस्तक बा—

(i) नेवान

प्रकाशक : भोजपुरी संस्थान, पटना ।

प्रकाशन वर्ष : १९९३ ई०, पृष्ठ स० ६४, मूल्य २०।- रु० ।

विशेषता : भोजपुरी के प्रथम हाइकू संग्रह जवना में हाइकू शैली से जुड़ल टाँका एवं सेनूरयू के भी दू-दू छन्द बा ।

(१६) **सन्त कुमार वर्मा** (जन्म ११-२-१९१४ ई०) वयोवृद्ध अधिवक्ता एवं साहित्यकार श्री वर्माजी के भोजपुरी में प्रकाशित पुस्तक बाड़ीसन—

(i) बाबू

प्रकाशक : साहित्य परिषद, सिवान ।

प्रकाशन वर्ष : १९७७ ई०, पृष्ठ स० ३४, मूल्य २।- रु० ।

विशेषता : स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के अवकाशप्राप्त कइला के बाद निजी सचिव श्री वर्माजी द्वारा राष्ट्रपतिजी के संक्षिप्त जीवनी । एइमें 'जीवन की झाँकी' में तारीख के संगे उनकर संक्षिप्त जीवन-वृत्त दीहल गइल बा ।

(ii) नवज्योति

प्रकाशक : साहित्य परिषद, सिवान ।

प्रकाशन वर्ष : १९७० ई०, पृष्ठ स० १७६ ।

विशेषता : एह संग्रह में सारन जिला के कवियन के हिन्दी, भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

शब्द चित्रात्मक कहानी

समय

—पी० चन्द्रविनोद

ऊ लड़िकाईं कहवाँ गइल ? कहवाँ हेरा गइल ऊ कुल खेल तमाशा ? आ केने समा गइल ऊ परती, ऊ गली, ऊ बगीचा आ ऊ समय जेइमें फर-गुद्दी नीयर फुदुकत चलत रहे लड़िकाईं। ना त, केनियो ऊ 'गतिया' लउकता आ ना ऊ 'इदिया' लउकत बिया, जेकरा संगे दिन-रात लड़िका अझुराइल रहत रहलेसन।

अपना भरल-पुरल टोला के लड़िकन का बीचे, हमार मन खोजे लागल वोह लड़िकाईं के, जे पच्चीस-तीस वर्ष पहिलहीं सब छोड़-छाड़ के चुपके से केने दो परा गइल। वोह लड़िकाईं के हम खोजीले बार-बार, बाकिर खाली खोजलके भर हाथे लागेला। अब त धुआँत याद भर ओकर रह गइल बा।

याद परेला ऊ खेल आ ऊ मस्ती जवना में, मन जो अझुरा जाय, त पते ना चले कि कब गदबेर हो गइल आ कब हो गइल अन्हार ! आ ऊ खेल कवन ? कबड्डी, गुल्ली डंडा, चिक्का भा मुर्गा कु-कु-कू त तनी बाद में आवसन ! पहिले त खाली लुका-छिपी भा चिचिरी परउवल रहे। चोंच आ झुलहा त मौसमी खेल रहले सन आ बित्ता, गोटी आ ओका-बोका 'इनडोर गेम'।

लुका-छिपी भा चिचिरी परउवल जब नधाय त चुड़िहार टोली के केकहो, कोंहार टोली ले गोल सरकत चल जाय आ खेल का सुर में बुझइबे ना करे कि कब अन्हार हो गइल। खेल कवो खतमाय थोरहीं ? ऊ त बीचे में बंद करे के परे, जब बिसेसरा, पियरिया आ रुखिया के वोह बेरा के खर्ची भा कबो बाबू के खैनी खातिर दुकान जाए में देर होखे लागे। आँखिन का अन्हे लुकाइल अन्हार जब गप दें सोझा ठाढ़ हो जाय त एक बेर देह सनसना जाय !

www.bhojpurisahityangan.com

अन्हार होखे का पहिले घरे लौट आवे के कड़ा नियम रहे। आ एने रास्ता चउवाइन का गली होइए के रहे ! चउवाइन के गली रहे त छोटे, बाकिर अकेले वोह में से पार कइल सोझ बात ना रहे ! रुखिया, बिसेसरा आ पियरिया त दुकान चल जा सन। हजाम टोली के जसिया आ धरमनाथवा, बलेसर बाबा का दुआर का तरफ से फुर्र से सरक जा सन। आ, हम अपना टोला के अकेला बाँच जाईं।

बब्बन बाबा के कोनाटा ले त अकेले आवे में कवनो दिक्कत ना रहे, बाकिर गली में ढूके का बेर, गोड़ डरे थथम जाय। आगे अकेले बढ़े में परान धुकुर-धुकुर करे लागे। जब दुपहरिया का एकान्ता में अकसरुआ गली पार करे में नवो नतीजा हो जाय आ जय हनुमान जी, जय हनुमान जी के जाप करत, गोड़ कपार पर धके दउर लगावे के पड़े, तब अन्हारा के हाल बुझहीं लायक बा। कोनाटा पहुँच के वोह मुँहे जाएवाला केहू ना केहू के राह देखहीं के पड़े।

सुनले रहीं कि कवो बाबू बिरिजलाल के उहाँ बइठका रहे। अपना समय में उनकर बड़ी चलती रहे आ ऊ एक नम्बर के जालिम आदमी रहले। धन आ जन के जोर आ दाव-पेंच के गजबे धाक रहे उनकर। ऊ जेनिए ताक देस, तेनिए आग लाग जाव। उनका सोझा केहू का मूड़ी उठावे के साहस ना रहे।

एक बेर एगो बाबा जी कुछ तरख बोल दीहले, त बिरिजलाल वोही घरी उनकर मूड़ी उतरवा के अपना बइठके का सोझा गड़वा दीहले, बाकिर केनियो खरो ना खरखराइल। बाद में जब बब्बन बाबा के ओइजा घर बनल त ओतना जगह छोड़ दिआइल जेतना में बिरिजलाल लाश गड़वा देले रहले। ऊ छूटल कोना हमेशा वोह घटना के याद परावत रहेला।

ऊ ब्रह्महत्या बड़ा महँगा पड़ल। ऊ त ओहीजा ब्रह्म पिशाच बनके बसिए गइल। बिरिजोलाल के लेबीतल। एकदिन अनसोहातो ऊ खून ढकच के मर गइले। का दो उनका घर में जब भूतन के उत्पात होखे लागल त उनकर भाई गाँव के सब छोड़-छाड़ के अपना पूरा परिवार का संगे छपरा का कोठी में रहे लगले आ एह बइठका में हमेशा खातिर ताला लाग गइल।

ऊ लोग त गाँव से गइल बाकिर बाबू बिरिजलाल के भूत गाँवे रह गइल आ भंइसा का भेष में आपन करामात देखावे लागल आ ई गली

www.bhojpurisahityangan.com

भूत के डेरा बन गइल। आवे जायेवाला जो हिमतगर ना होखे त अन्हारा में ओकर पार कइल आसान ना रहे। तब, कतना लोग के बरम्ह पिशाच धरे, कतना लोग चुड़ैल का फेरा में पड़े आ कतना लोग का कवनो ना कवनो हवा लग जाय। एकरा खातिर कबो हेने पचरा सुनाय आ कबो होने सुनाय। जेने-तेने ओझा गुनी के झाड़-फूंक लागले रहे।

चउबाइन के दुआर पहिले गलिए में खुलत रहे। बाकिर सब, बूझ समुझ के ऊ आपन निकसार परती में फोर लीहली।

हम जइसहीं तनी सेयान भइलीं—हमार पढ़ाई गड़बड़ात देखके घर के लोग हमरा के दोसरा जगह भेज दीहल। पढ़ाई-लिखाई आ फेर नोकरी-चाकरी में एक तरह से हमार गाँव छुटिए गइल। कभी-कभार गाँवे आवे के मौका जरूर भेंटाय बाकिर साँझे आईं त बिहाने जाईं। एही में सब संगी-साथी छूट गइले। बाकिर मन में गाँव के खिचाव बनल के बनले रह गइल। रह-रह के याद परत रहले सब संगी साथी, चोंचिआत चोंच के चक्कर, बगीचा के झुलुहा आ दोल्हापाती, अँखमुदउवल, चिचिरी-परउवल, ओका-बोका, गड़हा में के मछरी छनावल, जगदेव चौबे के दुआर के गवनई, मनहक लेके दुआरी-दुआरी माँगत-चाँगत इदिया, जनमे के आन्हर गतिया का लड़िकने का बीचे रहल, कँसी बजाके ओकर गीत गावल, ओकरा के खेल-खेल में ठोकरियावल आ ओकर झूठहूँ दउरावल।

ढेर दिन का बाद एह कसमकस जिंदगी का अग्निकुण्ड से निकल के हमरा कुछ दिन खातिर गाँवे आवे के मौका हाथे लागल। सोचनी कि अबकी ऊ सब हरिहरा जाई जे झंउसा गइलबा। आ भरहिक कुछ दिन खातिर नया जिंदगी बटोर के ले आइब अपना संगे। अरमान के लमहर मोटरी बन्हले हम गाँवे अइनी।

स्टेशन पहुँचते पहुँचते साँझ होखे लागल रहे, से उतरते गाँव के कवनो एकवान के ना देखके, जवने भेंटाइल तवने टमटम पर बइठ गइनी। सोचनी—अब जवने भाड़ा माँगी, तवने दिआई। घरे पहुँचे के मन में बड़ा जल्दी रहे। घरे पहुँचत-पहुँचत गदबेर होइए गइल। जब भाड़ा देबे लगनी त बाबूजी इ कहके रोक दीहनीं कि ओकरा के देला के काम नइखे। ओकर हिसाब में मिनहा होला। हम मुँह ताके लगनीं त उहाँ के कहनीं—"आरे चीन्हत नइखऽ? ई रुखिया के बेटा नू हवे। ई कर्जा ले ले सन त एहींजगा नू सधावे ले सन!"

"रुखिया के बेटा?"—हम चिहाके पूछनीं! "रुखिया त हमरा सँगे खेलत रहे। ओकर बेटा हतहत हो गइल आ टमटमो चलावे लागल?"

www.bhojpurisahityangan.com

—हमरा बड़ा हैरानी बुझाइल। हैरानी एह से बुझाइल कि हमार बबुआ त अबहीं बबुए बाड़े। बाकिर बाबूजी हैरान रहीं कि हम ओकरा के चीन्हले ना सकनीं!

अन्हार हो गइल, एह से हम कहीं निकल ना सकनीं। बनारसी ठाकुर हमार आइल जानके भोरहीं लाठी ठेंघत भेंट करे अइले। उनका से बड़ा देर ले बतकही भइल। उनके से पता चलल कि पियरिया के कबे बियाह हो गइल आ अपना बाल-बच्चन का संगे ससुराल में भरल पुरल बिया। नोनिया लोग के नोनिआइल माटी बखोर के नमक आ शोरा बनावे के धंधा बन्द हो गइल त बिसेसरा कुदारी-छइंटी उठाके माटी काटे बंगाल निकल गइल। रुखिया चौबीस परगना के चटकल में काम धलीहलस। धरमनाथवा के परिवार बढ़ल त सिवान में अपना मामा का सैलून में कमाए लागल। इदिया बरिसन पहिले मस्जिद का दुआरी सुतल से सुतलहीं रह गइल आ जसिया, बनारसी ठाकुर का बुढ़ा गइला से कबे उनकर लोखर उठाके यजमनिका संभाल लीहलस।

बनारसी ठाकुर से इहो पता चलल कि बगीचा कटाके खेत बन गइल। परती में लोग बढ़त-बढ़त छोट अँगनई बना दीहल। चउबाइन के गली अब चिन्हाते नइखे। बाबू बिरिजलाल के खंडहर के ताला टूट गइल आ वोह में शमशेर मियाँ आपन घर बनाके बाल-बच्चा का संगे मजे से बाड़े आ चीक के धंधा में लागल बाड़े। शमशेर वो बगल में एगो आउर दरवाजा फोर के मोदीखाना खोल लीहले बाड़ी आ गली के कुल भूत का जाने कहवाँ परा गइले सन।

लड़िकन के चिचिरी-परउवल केने दो हेरा गइल। सब लड़िका रेडियो भा टी० वी० में समा गइल बाड़ेसन। आन्हर गतिया कब दो अपना माई के छोड़के कतहीं भाग गइल आ एतना दिन बीत गइल बाकिर ऊ लौट के ना आइल।

हम पूछनीं—"खोजाइल ह ना?" ऊ कहले—"ए बबुआ! के खोजो ओकरा के? केकरा एतना फुर्सत बा कि आपन छोड़के खोजत चलो?" ऊ फेर बोलले—"ओकरा भागते महतरियो मर गइल आ ओकर पितिया घरवा भठवा के जुरते आपन फरदावाँ कर लीहलस।" सब सुनके हमार मन कइसन दो हो गइल।

देखते-देखते हफ्ता भर के हमार छुट्टी अनसोहातो ओरा गइल। हम कलकत्ता लौट अइनीं आ फेर हमार रोज के अझुरहट शुरू हो गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

अम्मा बाबूजी के अब उम्र हो गइल रहे से भइया लोग जबरी वोह लोग के पटना अपना लगे ले आइल लोग। गाँव के घर, खेत-बघार अब आदमी जन संभाले लगले। अइसे, बाबूजी का कभी-कभार अइले गइले कबनो दिकदारी ना रहे। गाँव के सब सिलसिला जस के तसे रहे, बाकिर गाँवे जाए के हमार भीतरी इच्छा जइसे मर गइल होखे!

हमार पत्नी कतना बार कहेली कि लड़िकन के कभी-कभार गाँव के माटी जरूर छुआ देवे के चाहीं। हम हर बेर 'हँ' जरूर कह दीले, बाकिर हमार गाँवे गइल कबो होला ना। बुझाला कि अब इहवाँ आ उहवाँ में फरके का रह गइल बा। एहींगऽ समय सरकत चलल जाता आ हमनी रेलगाड़ी का डब्बा में बइठल पसिंजर लेखा, बिना कुछ उत्जेव कइले कहाँ से कहाँ खिंचात चलल जात बानीं।

एक दिन पत्नी का सगे हम काली मंदिर गइनीं। दर्शन पूजा का बाद निकलल आवत रहीं तले हमरा कान में एगो गीत परल—"बाप हमारा जीवित नाहीं, माता करती गुलाम। रामगती है नाम हमारा, भजले सीता राम।" चिन्हार गीत के पाँती आ सुर हमार गोड़ थाम लीहलस। हम लोग के भीड़ चीरत गोल का भीतर ढूक गइनीं। देखनीं, एगो झिरकुट बूढ़ डुग्गी बजाके मगन भइल गावत रहे। उम्र भइला का बादो उहे आवाज रहे आ उहे रस रहे जे लड़िकाई में सुनले रहीं।

हमरा मुँह से जोर से निकलल—"गतिया?" ऊ गावल रोकके तनी थथमला आ हँस के ओइसहीं बोलल जइसे लड़िकाई में ठोकरिया के भागला पर बोलत रहे—"चीन्ह लीहनीं, चीन्ह लीहनीं, रउरा ललन बाबू! ठोकरिआएब जन! हम चीन्ह लीहनीं।"

हम पूछनीं—"तोर कंसी का भइल गतिया?" ऊ हँसल—"ऊ तब नू रहे। तब आ अब का एके लेखा बा?"

गीत सुनेवाला लोग में से केहू का बाघा बुझाइल से बोलल—"आरे गाव गतिराम गाव!"

गतिया गावे में मशगूल हो गइल। हमरा लागल कि तबके गतिया आ अबके गतिराम के, समय के गति पूरा पूरी धरा गइल बा!

न्यू एफ/११, हैदराबाद कालोनी
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर
वाराणसी २२१००५

●

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी-लेखन–दिशा आ दशा

—डा० बच्चन पाठक 'सलिल'

अब भोजपुरी साहित्य में प्रकाशित पुस्तकन के संख्या बढ़ि रहल बा। जहाँ-तहाँ से पत्र-पत्रिको छपेके खबर मिलत रहेले। सभा-सम्मेलनो होता। ई सब शुभ संकेत बा। बाकिर भोजपुरी लिखे में—खासकर गद्य में अराजकता आ गइल बा। केहू भोजपुरी के एकदम गँवारू बनावे का फेर में बा, केहू ओकरा के हिन्दी के कार्बन-कॉपी बनावता। एह दूनो अति से बचे के चाहीं।

कुछ लोग श, ष, स आदि के प्रयोग से परहेज करता, संयुक्त अक्षर हटावता। ई प्रवृत्ति भोजपुरी खातिर घातक बा। जब शंकर आ संकर में, क्षत आ छत में फर्क ना रही, तब भाषा चोंचों के मुरब्बा हो जाई।

भाषा पात्र आ विषय के अनुकूल होले। आजकल केहू पढ़ल-लिखल भोजपुरिया माहटर ना कहेला, मास्टर कहेला, छतिरी ना कहे, क्षत्रिय कहेला, रजिन्नर बाबू ना कहे, राजेन्द्र बाबू कहेला, तब इहे रूप लिखाए के चाहीं। कथा कहानी में कवनो अनपढ़ देहाती का मुँह से तद्भव शब्द कहाय त चलि सकेला। कुछ संपादक लोग एही हठधर्मिता के शिकार बा। एही कारण हम कई जगह रचना भेजल बन्द कर देले बानीं। जब कवनो भाषा साहित्य बनेले, तत्सम रूप के अपनावेले। बंगला आ मैथिली एकर उदाहरण बाड़ीसन। भोजपुरी लेखन में एही प्रवृत्ति के अपनावे के पड़ी। लेखक लोग से निहोरा बा कि भोजपुरी में समरपन (समर्पण, पतरिका (पत्रिका), विदमान (विद्वान) जइसन बिगाड़ल रूप मत लिखीं, तत्सम शब्दन के व्यवहार करीं। ना त अगली पीढ़ी ना भोजपुरिए सीखि पाई, ना ओकर हिन्दी ज्ञान कायम रही।

भोजपुरी के आपन शब्द जरूर लिखाय जइसे-धीकल, खरकटल, गगरी, मेटा, अरुआइल आदि। एकरा में कवनो भ्रम ना होई।

भोजपुरी कविता में खाली सइयाँ, पियवा के गीत मत लिखाव। तुकान्त, अतुकान्त, सामयिक प्रसंग—सबपर कवि लोग लिखे। खाली आरती आ बारहमासा से कवनो साहित्य पुष्ट ना होला।

हमरा कथा-साहित्य में मध्यम वर्ग आ शहरी जीवन के वर्णन ढेर बा। गाँव से सीधा सम्बन्ध छूटल ढेर दिन भइल। आज प्रवासी भोजपुरिया

www.bhojpurisahityangan.com

लोग शहरो में रहता। वोह लोग के आपन समस्या बा। एह विषय पर लिखाए के चाहीं। गाँव के बुलकिया, महंगू चमार, आ फुलबसिया के कल्पित कथा कबले लिखाई? अब गांवो बदलि गइल बा। कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा से डा० दिवाकर पाण्डेय हमरा ऊपर पिछला साल शोध कइले। ऊ हमरा विचारन के बहुत विस्तार से लिखले बाड़े।

भोजपुरी में अनुवादो होखे के चाहीं। लेखक लोग अपने तीसमार खाँ मत बनसु। अंग्रेजी, बंगला, तेलगू, गुजराती आदि जवना भाषा के ज्ञान हो, ओकर नीमन रचना के अनुवाद भोजपुरी में आवे के चाहीं। भोजपुरियो के अनुवाद दोसरा भाषा में जाए के चाहीं। हमरा कुछ रचनन के अनुवाद बंगला, गुजराती या पजाबी में छपल बा। वोही आधार पर निखिल भारत बंग साहित्य सम्मेलन, दिल्ली हमरा के अमृत पुरस्कार देले रहे।

मारीशस के लेखिका सरिता बुद्धू जमशेदपुर आइल रहली। उनका सम्मान में हमरा अध्यक्षता में एगो गोष्ठी भइल। सरिता जी हमनी के कुछ रचना फ्रेंच अनुवाद खातिर ले गइली।

हिन्दी विभाग,
महिला कालेज, जमशेदपुर।

गजल

—गोपाल 'अश्क'

खुलल किताब बानी काथी घपल बाटे,
कि हम सुनाईं ओमे 'का का' लिखल बाटे॥

भरम में जिअले बानी आज ले हम जिन्दगानी,
जिनिगी के नाम पर मउअत मिलल बाटे॥

लउकत जे बानी आज ठूंठ बिनु पतई के,
एक दिन एहू प सुनी बसन्त खिलल बाटे॥

किरिया करार जीये मुये के खा के जे,
बढ़ल दू कदम, आज पीछा पड़ल बाटे॥

कतनो कढ़ाईं गीत प्रीत के नजर देखीं,
'अश्क' भरल दिन - रात सभ मिलल बाटे॥

प्र० सम्पादक, गमक (त्रैमासिक)
रानीघाट, वीरगंज-१३ (नेपाल)

www.bhojpurisahityangan.com

नवगीत

—सूर्यदेव पाठक 'पराग'

तरकुल के छाँव में
नफरत के गाँव में
कतना पैमाल भइल जिन्दगी !

पीरा अंगेज के
सपना सहेज के
बंधक पड़ल बाटे धड़कन करेज के
दर्द पोर-पोर ले
अँखियन में लोर ले
जिउवा के काल भइल जिन्दगी !

अपनापन छूट रहल
दिल दरपन टूट रहल
स्वारथ बटमार सभके सोझा बा लूट रहल
आदिमी बा दाँव पर
कागज के नाव पर
सतरंगी चाल भइल जिन्दगी !

समय ई संपेरा बा
लगा रहल फेरा बा
चंदन के डारी पर विषधर के डेरा बा
भूख कहीं लहकत बा
लोग बाग डँहकत बा
फटही रूमाल भइल जिन्दगी !

—अध्यापक, उच्च विद्यालय,
मढ़ौरा (सारण) ८४१४१८

●

www.bhojpurisahityangan.com

नुक्कड़ एकांकी

संतोषम् परम सुखम्

—डा० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

[मंच पर टहलत-पति पत्नी]

पत्नी-ओह ! हे राम ! हमरे के अइसन बदनसीब काहें बनवल ? हम कौन कसूर कइले रहनी हाँ ? कवना पाप के महादंड दे रहल बाड़ ? हम समाज में दोसरा से काहें हेंठ भइल रहत बानीं, हीन बनल बानीं ? हे राम ! हे राम !

पति—अइसे ना कहे के ! काहें अइसे सोचत बाड़ू ? कवना वजह से आपन बदकिस्मत मानत बाड़ू ?

पत्नी—रउरा लउकत नइखे ? आँख अछइत आन्हर बनल बानीं। काहें ना सोचीं ? देखीं, सामने सुधा बँगला में रहत बाड़ी। उनका मारुति कार बा। ऊ अफसर के रानी बाड़ी। अच्छा-अच्छा कपड़ा, गहना से लदाइल रहत बाड़ी। ऊ हमरे गाँव के हई। एगो हम बानीं कि आपन करम कूटत बानीं, भाग्य के झंखत बानीं।

पति—कइसे करम कूटत बाड़ू ? का तहरा दूनू जून भोजन नइखे मिलत ? का तहरा तन पर सुबहीत कपड़ा नइखे। का तहरा लगे जरूरत के सोना-चाँदी के गहना नइखे ? का तहरा के भगवान दूगो लाल नइखन देले ? आवश्यकता के कौन चीज तहरा पास नइखे—रेडियो, टी० वी०, टेपरिकार्डर, स्कूटर—का नइखे ?

पत्नी—उनकर पति अफसर बाड़े। ऊ कार पर चढ़के हवा खाये जाली, बाजार करे जाली। उनकर भाग्य देखके हमारा अपना भाग्य पर तरस आवेला।

पति—जलन कइला से आदमी खुदे जरेला। आगे बढ़े वाला आदमी के प्रतिस्पर्धा करे के चाहीं, होड़ लगावे के चाहीं, बाजी लगावे के चाहीं। तबे आदमी एक दूसरा से बराबरी कर सकी भा ओकरा से आगे निकल जाई।

पत्नी—कइसे आगे निकलबि रउरा ? रउरा त अबहीं साधारण क्लर्क बानीं। हम त मेट्रिको पास नइखीं। सुधा के पति इंजीनियर बाड़े। सुधा

www.bhojpurisahityangan.com

हमार हमजोली रहली। हमनी दूनो आदमी एके साथे पढ़त रहलीं। ऊ मैट्रिक के बाद कालेज में पढ़त रहली। मैट्रिक हम फेल क गइनीं। ऊ बुझाला बी० ए० पास क गइली। वोह लोग के का बराबरी होई ?

पति—काहें ? हम नाइट कालेज में पढ़त बानी। तूहूँ प्राइवेट से इम्तिहान द। कोशिश करींजा। निश्चय करीं जा कि हमनीं का पास करबि आ सुधा आ उनका पति से कवनो मामला में कम ना रहब जा।

पत्नी—ना, हमरा भाग्य में सुख नइखे।

पति—सुख कवनो चीज-बतुस ना ह कि ओकरा के द्रव्य से कीनके केहू ले ली। ई मन के भावना ह। ई सोचला आ महसूस कइला पर निर्भर करता। खराब से खराब अवस्था में आदमी सुख ना महासुख अनुभव क सकता आ सब सुख-सुविधा के बावजूद आदमी दुःखी हो सकता। जइसे तू सोचके अपना भाग्य के कोसत बाड़ू एह से कि तू अपना से ऊपर से तुलना करत बाड़ू। यदि इहे आपन तुलना भीखमंगा से कर जवन एह जाड़ा में खुला आसमान के नीचे रहत बाड़ेसन। ना उन्हनी के लगे कवनो ओढ़ना-बिछावना बा, ना आपन घर-द्वार आ नाहीं देह पर सुबहीत कपड़ा। नाश्ता-भोजन मांगके करे के बा। केतना लाचारी बा उन्हनी के, अगर तू आपन तुलना उन्हनी से करबू त देखबू कि तू कितना सुख में बाड़ू। भगवान के एह सुख-सुविधा खातिर हमनी के कृतज्ञ होखे के चाहीं। अपना भाग्य के सराहे के चाहीं ना कि कोसे के।

पत्नी—इहे सीख देत बानीं कि हम आपन तुलना भिखारी से करीं आ खाली सोचके खोखा सूखल सुख भोगला के अनुभव करीं ? मन के पोलाव बनाईं। ओही से जीहीं।

पति—ना-ना, हमरा कहे के मतलब ई नइखे। बल्कि हम ई कहल चाहत बानीं कि हम जतना में बानी ओकर तुलना अगर हम अपना से कमजोर गरीब से करब त हम बहुत बड़ लागब। अपना पर गर्व होई। हम अपने आप बड़ लागे लागब। अगर इहे आपन तुलना अपना से बड़का मनई से कइल जाई त हम बहुते छोट लागब जइसे हाथी के आगे चींटी। फेर अपने अपना पर तरस आवे लागी। हम एह संसार में बहुते छोट लागे लागब। एहसे सबके ओतने पैर पसारे के चाहीं जेतना लमहर चादर होखे। यानी अपना औकात में रहेके चाहीं। संतोषम् परम सुखम् रानी ! परम सुखम् !! संतोषे बड़का सुख ह !!!

—ग्राम-पोस्ट—निमेज
जिला—बक्सर (बिहार)
पिन ८०२१३०

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक समीक्षा

भोजपुरी लोकधुन में गीता : भगवान गीता

—सुभाष चन्द्र यादव

पुस्तक—भगवान गीता, अनुवादक गीतकार भगवान सिंह 'भास्कर', प्रकाशक—भोजपुरी विकास मण्डल, सिवान (बिहार), प्रकाशन वर्ष : १९९४ ई०, पृष्ठ सं० : १४८, दाम : २४।- रु० ।

भगवान सिंह 'भास्कर' जी पेशा से कर्मठ बैंक पदाधिकारी आ शिक्षा से विज्ञानवेत्ता-गणितज्ञ के सँगे-सँगे हृदय से साहित्यकार बानीं । इहाँ के हिन्दी-भोजपुरी के कवि—कहानीकार—सम्पादक—अनुवादक – गीतकार–निबंधकार के संगे-संगे भोजपुरी लोक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान बानीं। इहाँ के प्रकाशित अउर पुस्तकन में इन्द्रधनुष (हिन्दी कविता संग्रह : तीन खण्ड में), भोजपुरी के विवाह गीत (३६ नेग के १०८ गीत), मंगलगीत (१०२ मांगलिक झूमर आ सहाना) आ लोकधर्म (भोजपुरी लोकसाहित्य-परक शोधपूर्ण निबंध संग्रह) बा । भोजपुरी लोकगीतन के रक्षा का क्षेत्र में इहाँ के बादवाला तीनू संग्रह बहुत महत्वपूर्ण देन बा।

एह समीक्ष्य कृति 'भगवान गीता' के पहिले देशन-विदेशन में चाहे भोजपुरियो में श्रीमद्भगवद्गीता के कई एक पद्यमय अनुवाद बाड़े, बाकिर आजले अइसन दोसर ना रहल हा जवन भोजपुरी के अनेक लोकधुनन के तर्ज में होखे आ ओकर कैसेटो बना के धार्मिक आ सामाजिक उत्सवन में गावल-बजावल जा सके । ई अपना ढंग से पहिला पुस्तक बा । भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अक्टूबर १९९६ अंक में विद्वान समीक्षक डा० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' ठीके लिखले बानीं—"भगवान सिंह 'भास्कर' के 'भगवान गीता' भोजपुरी के विभिन्न लोक-गीतन के धुन में पहिला अनुवाद पुस्तक बा । सरल, सहज, सुबोध भाषा में आम मनई के बुझाए लायक एगो रुचिकर पुस्तक ।" गीता के अमर संदेश—भगवान कृष्ण के उपदेश (जेइमें जिनगी के कवनो पक्ष छूटल नइखे) के देहात के असंख्य निपढ़ जनता तक पहुँचावे के कवि-गीतकार के प्रयास काफी सराहनीय बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

लोक-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् पं० गणेश चौबे पुस्तक के प्रस्तावना में लिखले बानीं— 'गीता का संदेश के देहात का अनगिनत निपढ़ जनता तक पहुँचावे के कवि के एह प्रयास के हम स्वागत करत बानीं।''

अनुवाद अपना आप में एगो कठिन काम ह, ओहू में ताल-सुर-लय के साथ अनुवाद होखे त ओकर दुरूहता अउर बढ़ि जाला। एह तरह से श्रीमद्भगवद्गीता के संस्कृत के श्लोकन के भोजपुरी लोक-गीतन के तर्ज में अनुवाद केतना कठिन होई - एकर अनुमान सहजे लगावल जा सकता। ओहू में 'भास्कर' जी एगो-दूगो लोकगीत के तर्ज में अनुवाद नइखीं कइले— लगभग हर पुष्प एगो नया धुन में बा।

ई पुस्तक श्रीमद्भगवद् गीता के १८ अध्याय में से अभी छव अध्याय समेटले बा जवना के दू खण्ड अबहीं प्रकाशित होखेवाला बा। पहिला खण्ड के छोटहन में विवरण अइसे बा--

अध्याय १

एइमें श्रीमद्भगवद्गीता के ४७ श्लोकन के भास्करजी ११ पुष्पन (गीतन) में सुन्दर अनुवाद प्रस्तुत कइले बानीं। ई अनुवाद १० विभिन्न लोकगीतन के तर्ज में बा। एगो उदाहरण देखीं—

तर्ज—एकही नगरिया के हम तूहूँ जनमल,
कवना नाता से देल गारी आहो लाला ?

अनुवाद —''एकरा ही बादे संजय कहले धृतराष्ट से हो,
अर्जुन के मोह भइले भारी आहो लाला।
अर्जुन के मोह भइले भारी॥''

—सातवाँ पुष्प, पृष्ठ सं० ४५-४६

अध्याय २

एइमें श्रीमद्भगवद्गीता के ७२ श्लोकन के भास्करजी द्वारा १७ गीतन में सुन्दर अनुवाद प्रस्तुत कइल बा। ई अनुवाद १७ विभिन्न लोकगीतन के तर्ज में दीहल बा। एगो उदाहरण देखीं—

तर्ज --सासु मोरे मारे रामा बाँस के छिउकिया।

अनुवाद—''वासना से छूटे तनी,
निराहार रोगिया।
ए अर्जुन सुन हो !
छूटे नाहीं प्रीतियो के जोर॥''

—चौदहवाँ पुष्प, पृष्ठ सं० ७३--७४

www.bhojpurisahityangan.com

अध्याय ३

एइमें व्यासजी के ४३ श्लोकन के भास्कर जी ११ भोजपुरी गीतन में सुन्दर अनुवाद कइले बानीं। ई अनुवाद १० विभिन्न भोजपुरी लोकगीतन के तर्ज में बा। एगो उदाहरण देखीं—

तर्ज—कवना नगरिया के लामी-लामी केशिया हो,
केकर पियवा बिसनिया हाय सियाराम के भजो।

अनुवाद—"राग अउर द्वेष दूनू आदमी के दुश्मन हो,
आवश्यक बा दूनू पर विजयवा हाय श्रीकृष्ण के भजो।"
—दसवाँ पुष्प, पृष्ठ सं० ९१

अध्याय ४

एइमें गीता के ४१ श्लोकन के भास्कर जी द्वारा ९ भोजपुरी गीतन में सुन्दर अनुवाद बा। ई अनुवाद ९ विभिन्न भोजपुरी लोकगीतन के तर्ज में बा। एगो उदाहरण देखीं—

तर्ज—खा गइले हो चितचोर मोरे दहिया।

अनुवाद— "ना बूझ हो अर्जुन! मोरे बतिया।
जागतिक आश्रय से रहित पुरूषवा।
अगम परमेश्वर से तृप्त जेकर मनवा॥
उहे त बाड़े महान मोरे भइया।
ना बूझ हो अर्जुन मोरे बतिया॥"
—पाचवाँ पुष्प, पृष्ठ सं० १०२

अध्याय ५

एइमें श्रीमद्भगवद्गीता के २९ श्लोकन के भास्करजी ९ भोजपुरी गीतन में सुन्दर अनुवाद प्रस्तुत कइले बानीं। ई अनुवाद ९ भिन्न-भिन्न भोजपुरी लोकगीतन के तर्ज में बा। एगो उदाहरण देखीं—

तर्ज—कहँवा के पियर माटी,
कथी के कुदार हे?

अनुवाद—"काहें ना बूझ अर्जुन!
ज्ञान योग के महिमा हे।
लोक – परलोकवा में,
एकर बा गरिमा हे॥"
—सातवाँ पुष्प, पृष्ठ सं० ११७–११८

www.bhojpurisahityangan.com

अध्याय ६

एइमें व्यासजी के ४७ श्लोकन के भास्कर जी द्वारा १२ भोजपुरी गीतन में सुन्दर अनुवाद प्रस्तुत कइल गइल बा। ई अनुवाद १२ विभिन्न भोजपुरी लोकगीतन के तर्ज में बा। एगो उदाहरण देखीं—

तर्ज—पनिया के जहाज से पलटनिया ले ले अइह,
पिया! ले ले अइह हो।
अनुवाद-"योगाभ्यास से तू चित उपराम करीह,
अर्जुन! पाई जइब हो।
सूक्ष्म बुद्धि से ईश्वर के,
तूहें पाई जइब हो॥"

—छउवाँ पुष्प, पृष्ठ सं० १२८

पुस्तक के आखिर में पृष्ठ १३८ से १४४ तक हर गीतन के तर्ज दे दीहल बा जवना से गीतन के गावे में सुविधा होई। पुस्तक के प्रारम्भ में अनुवादक-गीतकार द्वारा माता-पिता, माँ शारदा, परमपिता परमेश्वर आ गुरु के गेय पदन में सुमिरन भास्करजी के भक्तिभावना के परिचायक बा। भास्करजी ई पुस्तक आठ पाँती के गीत के संगे अपना स्वर्गीया माता बचनी देवी के समर्पित कइले बानीं। सुन्दर गेय पद में लिखल 'पूर्वाभ्यास' से श्रीमद्भगवद्गीता के पूर्व के पृष्ठभूमि स्पष्ट समुझ में आ जाता।

भगवान सिंह 'भास्कर' के ई पुस्तक भोजपुरी लोकरागिनी के एगो अनुपम उदाहरण बा। भास्कर जी के ई कृति काफी प्रतिष्ठा बढ़वलस—(१) सिवान जिला साहित्य सुरभि द्वारा २३-७-१९९५ के सन्त तुलसी सम्मान से आ (२) सिवान के उर्दू साहित्यिक संस्था बज्मे अनवर द्वारा २३-६-१९९६ के नजीर अकबरावादी एजाज से सम्मानित कराके। पुस्तक के आवरण छपाई आ पक्का जिल्दबाजी काफी आकर्षक बा।

एह तरे सब ओर से देखला पर भगवान गीता एगो काफी प्रशंसनी काव्य-कृति बा जवन भास्कर जी के यश-पताका भोजपुरी जगत में दूर-दूर तक फहराई।

—प्राचार्य दारोगा प्रसाद राय
महाविद्यालय, सिवान (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

भारत मइया

—भगवान सिंह 'भास्कर'

सोना के चिरइया आपन देश भारत मइया,
ए सोहागिन सुन।
लहरेला गंगाजी के धार,
ए सोहागिन सुन ॥

एक सीमा बान्हेला हमरो हिम हवलदारवा,
ए सोहागिन सुन।
तीनू सीमा सिन्धु के कछार,
ए सोहागिन सुन ॥

धरा पर के सरग इहाँ शोभेला कश्मीरवा,
ए सोहागिन सुन।
देख नंदनवन नाचे मन मोर,
ए सोहागिन सुन ॥

राम कृष्ण गाँधी इहवाँ लीहले अवतारवा,
ए सोहागिन सुन।
बुद्ध महावीर के त संदेश,
ए सोहागिन सुन ॥

धन बा आदिमी जे जन्मे अनुपम एही ठउँवा,
ए सोहागिन सुन ॥
जहाँ जनमे के तरसे सुरेश,
ए सोहागिन सुन ॥

इहे हमार चाँद मामा इनहीं सुरूज बाबा,
ए सोहागिन सुन।
इहे नू गॉड अल्ला भगवान,
ए सोहागिन सुन ॥

www.bhojpurisahityangan.com

दुखवा के बदरी आवे कबो ना एके कगरी,
ए सोहागिन सुन।
फेरू नाहीं होखे दुई दाल,
ए सोहागिन सुन ।।

सुरसती लछीमी के रहे सब पर सदा किरपा,
ए सोहागिन सुन।
ना मूरख ना केहु फटेहाल,
ए सोहागिन सुन ।।

लहरे ई तिरंगा आपन सगरो संसारवा,
ए सोहागिन सुन।
अग - जग में होखे जय जयकार,
ए सोहागिन सुन ।।

—सम्पादक, 'बयार'
प्रखण्ड कार्यालय के सामने
लखरांव, सिवान (बिहार)-८६१२२

www.bhojpurisahityangan.com

पाती पवनी---

प्रियवर 'भास्कर' जी,

अभिनन्दन ।

शंखनाद छपकर साहित्याचार्य (एम. ए. स्तर) के पाठ्यक्रम में स्वीकृत हुआ है। आपकी रचना "विश्व प्रेम" इसमें पृष्ठ ५६ पर छपी है। स्वस्थ, प्रसन्न होंगे।

डा० श्यामसुन्दर 'सुमन'
मुख्य निदेशक
अखिल भारतीय साहित्यकार
अभिन्दन समिति
बिहारीपुरा, मातागली
मथुरा (उ० प्र०)

भाई 'भास्कर' जी,

नमस्कार ।

लेखन में आप दौड़े चले जा रहे हैं, खुशी है। 'भो-पुरी के विवाह गीत' और 'मंगल गीत' बहुत पसन्द आये।

आप कैसे हैं, लिखेंगे।

डा० रमाशंकर श्रीवास्तव
रीडर, हिन्दी विभाग
राजधानी कालेज
(दिल्ली वि० वि०)
नई दिल्ली–११००१५

आदरणीय भाई 'भास्कर' जी,

नमस्कार।

दूनो पुस्तकन ('भोजपुरी के विवाह गीत' आ 'मङ्गल गीत') में सम्पूर्ण भोजपुरी संस्कृति समाहित बा। यदि हमनी के अपना लुप्त होत संस्कृति के बचा लीहल जाव त वर्त्तमान पीढ़ी खातिर ई एगो महान उपलब्धि होई। हमनी के कुल्हि संस्कृति के सार लोक-गीतने में लुकाइल बा। पुरनकी लोक-गीतन के रक्षा कइके रउवाँ एगो प्रकाश-स्तम्भ के काम कइले बानी। आगे आवे वाली कई पीढ़ीन के ई पुस्तक प्रेरणा देत रही। हमार बधाई स्वीकार करीं।

डा० (श्रीमती) राजेश्वरी शांडिल्य
प्रधान सम्पादक, भोजपुरी लोक
(मासिक पत्रिका)
लखनऊ (उ० प्र०)

आदरणीय 'भास्कर' जी,

सादर नमस्कार।

राउर 'लोकधर्म' पुस्तक डाक से हमके २१-५-९७ के मिलल। पुस्तक में से चिट्ठी पवलीं। बहुते खुशी भइल।

'लोकधर्म' त हर दृष्टि से अनमोल कृति बा। वास्तव में रउरा भोजपुरी साहित्य आ लोक साहित्य में उल्लेखनीय कार्य कर रहल बानी। राउर जतना सराहना कइल जाय, कम होई। रउरा आपन सानी अपने बानीं। रउरा हमार हार्दिक बधाई आ शुभकामना लीं।

राउर
श्री राम सिंह 'उदय'
बांसडीह
बलिया (उ० प्र०)

www.bhojpurisahityangan.com

लोक साहित्य के अध्येता कवि-कहानीकार-गीतकार-सम्पादक-अनुवादक-निबंधकार भगवान सिंह 'भास्कर' के अनमोल कृतियन—

हिन्दी कविता-संग्रह

१. इन्द्रधनुष : तीन खण्डों में (प्र० वर्ष : १९९३ ई०, पृ० सं० ९४) २०।- रु०
[इस संग्रह की एक कविता 'विश्व प्रेम' साहित्याचार्य (एम. ए. स्तर) के पाठ्यक्रम में स्वीकृत अन्तर्राष्ट्रीय कविता संकलन 'शंखनाद' में विश्व के अनेक प्रसिद्ध कवियों एवं राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर', उपेन्द्र नाथ 'अश्क', डा० हरिवंश राय बच्चन, पद्मश्री चिरंजीत, पद्मश्री क्षेमचन्द्र सुमन, गोपाल सिंह 'नेपाली' आदि की कविताओं के साथ संग्रहीत ।]

लोक साहित्य

२. लोकधर्म : शोधपूर्ण निबंध संग्रह (दो खण्डों में) ६०।- रु०
प्र० वर्ष १९९६ ई०, पृ० सं० २०८

३. मंगल गीत : (१०२ मांगलिक झूमर और सहाना) ४०।- रु०
प्र० वर्ष १९९५ ई०, पृ० सं० १२८

४. भोजपुरी के विवाह गीत (प्र० वर्ष १९९५ ई०, पृ० सं० १६४) ५०।- रु०
विवाह के हर नेग की व्याख्या सहित ३६ नेग के १०८ गीत

लोकरागिनी (धार्मिक)

५. भगवान गीता : भोजपुरी लोकधुन में श्रीमद्भगवद्गीता २४।- रु०
प्र० वर्ष १९९४ ई०, पृ० सं० १४८

विविध

६. डुमरी कतेक दूर : भोजपुरी निबंध संग्रह (संयोजक) ४५।- रु०
७. सोनहुला सफर (भोजपुरी यात्रा संस्मरण) प्रेस में
८. भोजपुरी के स्मिता चिंतन (सह सम्पादन) प्रेस में

खातिर सम्पर्क करीं

—प्रभात रंजन सिंह 'सुधांशु'
प्रकाशन मंत्री, भास्कर साहित्य भारती
प्रखण्ड कार्यालय के सामने
लखरांव, सिवान (बिहार) ८४१२२६

भगवान सिंह 'भास्कर' द्वारा सम्पादित, प्रभात रंजन सिंह 'सुधांशु द्वारा प्रकाशित आ कुमार प्रिंटर्स, हाथीगली, वाराणसी (उ० प्र०) में मुद्रित ।